This Internet edition is free for distribution.

An Introduction to
E.T.G. AyurvedaScan
Ayurveda Diagnosis Technology

आयुर्वेदिक निदान के लिये
ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन
तकनीक का परिचय

This Internet edition is free for distribution.

An Introduction to
E.T.G. AyurvedaScan
Ayurveda Diagnosis Technology

आयुर्वेदिक निदान के लिये
ई०टी०जी० आयुवेदास्कैन
तकनीक का परिचय

लेखक और सम्पादक ;

डा० देश बन्धु बाजपेयी

B.M.S. [Lucknow], Ayurvedacharya [Delhi], D.P.H. [Germany]
M.I.C.R. [Mumbai], C.R.C. [Cardio-vascular]
M.D. [Medicine], Ph.D. [E.T.G. Technology]

अन्वेषक और मुख्य ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन इन्वेस्टीगेटर,

कनक पाली-थेरापी क्लीनिक एवं रिसर्च सेन्टर,

६७ / ७०, भूसाटोली रोड, बरतन बाज़ार,

कानपुर – २०८००१ , U.P., India

मोबाइल ;07376301730 फोन; 0512 2367773

सन्स्करण ; प्रथम आवृत्ति ; सन २०१७

This Internet edition is free for distribution.

मूल्य ; 300/- तीन सौ रुपये प्रति पुस्तक

कापीराइट (C) ; सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक और प्रकाशक ;

कनक पालीथेरपी क्लीनिक एवम रिसर्च सेन्टर प्रकाशन,
६७ / ७०, भूसाटोली रोड, बर्तन बाज़ार,
कानपुर - २०८००१, उत्तर प्रदेश,
भारत Republic of India

Web site :
www.ayurvedaintro.wordpress.com
www.youtube.com/drdbbajpai
www.slideshare.net/drdbbajpai

E-mail : drdbbajpai@gmail.com

Dedicated to

Whom I love too

Bandhu

प्राक्कथन

आयुर्वेद की आधुनिक तकनीक ''इलेक्ट्रो त्रिदोष ग्राफ'' यानी '' ई॰टी॰जी॰ आयुर्वेदास्कैन'' के बारे मे अभी तक जितनी भी जानकरिया दी गयी है , वे छुट पुट रूप मे हिन्दी अथवा अन्ग्रेजी भाषा की पत्र और पत्रिकाओं मे प्रकाशित हुयी है / इस तरह से प्रकाशित की गयी जानकारियां अलग अलग होने से एक समस्या यह हुयी कि आयुर्वेद की इस आधुनिक टेक्नोलाजी के बारे मे लोगो को परिपूर्ण जानकारी तथा सूचनायें एक साथ और एकत्रित नही मिली / जिससे फल स्वरूप आयुर्वेद प्रेमियों को इस आधुनिक तकनीक के बारे मे जिस तरह की अपेक्षित जानकरी और सूचनाये मिलनी चाहिये थी, वैसी सूचनाये और जानकारियां नही मिल सकीं /

हमारा हमेशा यही प्रयास बना रहता है कि आयुर्वेद के ग्यान को आधिक विग्यान सन्गत बनाने के लिये इसके सभी विष्यों को आधुनिक विग्यान के साथ चो-रिलेट किया जाय, चाहे वह विग्यान का कोई भी सम्बन्धित शाखा क्यों न हो ? हमारे पूर्वजो द्वारा सन्ग्रहित चिकित्सा विग्यान को अधिक विग्यान सनगत बनाने का यही एक रास्ता है /

प्रस्तुत पुस्तक मे इस तकनीक के बारे मे अधिक से अधिक जानकारी देने का प्रयास किया गया है /

आयुर्वेद प्रेमियो और पाठको से निवेदन है कि वे प्रस्तुत पुस्तक को पढे और जो कमिया हो उनको इन्गित करे ताकि इस पुस्तक के दूसरे आवृति प्रकाशन मे सभी कमियो को दूर किया जा सके /

देश बन्धु बाजपेयी

04 June 2017
Ganga Dashaharaa

इलेक्ट्रो त्रिदोष ग्राफ ;ई०टी०जी० परिचय

ई०टी०जी० का परिचय मुख्यतया आयुर्वेद से जोड़ते है / जैसा कि आयुर्वेद के बारे मे लोगो को जानकारी है कि यह भारतीय चिकित्सा विग्यान है और जैसा कि आयुर्वेद के मनीषियों का मानना है कि यह विग्यान पाच हजार साल से अधिक का पुराना है / इसलिये इसे विश्व की सबसे प्राचीनतम चिकित्सा और स्वास्थय विग्यान की सन्ग्या दे सकते है /

आयुर्वेद चिकित्सा विग्यान है इसलिये रोगो के निदान के लिये और स्वास्थ्य की रक्षा के लिये ्स्थापित किये गये नियम और दिशा निर्देशों का निर्धारण ग्रन्थो मे आयुर्वेद के चिन्तकों के द्वारा किया गया है / इन सबका सन्दर्भ मनीषुयो द्वारा लिखी गयी पुस्तको मे अवलोकन करना चाहिये /

इस पुस्तक मे नाड़ी परीक्षण और नाड़ी विग्यान से समबन्धित बातो का ही उल्लेख किया जायेगा इसलिये विषयान्तर से बचने के लिये मुख्य विषय पर ही विचार करेन्गे /

जैसा कि पूर्व मे बताया गया है कि ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन आयुर्वेद क्से सम्बन्धित सर्वोच्च्च कोटि की निदान ग्यान और रोग निदान की तकनीक है जिसके द्वारा आयुर्वेद के मौलिक सिध्धान्तों का स्टेटस क्वान्टीफिकेशन किया जाता है और इसका दूसरा कार्य निदान ग्यान से जुड़ा है / चूकि यह सारे शरीर का परीक्षण है इसलिये शरीर के सभी सिस्टम की फीजियोलाजिकल और पैथोलाजिकल स्तिथि का आन्कलन साथ साथ करती है /

यह एक तरह का "’इलेक्ट्रिकल स्कैन” है जो शरीर की आयुर्वेद के अनुसार कि गयी मैपिन्ग के हिसाब से शरीर के चुने गये हिस्सो का इलेक्ट्रिकल वेव्ज रिकार्ड करती है / इलेक्ट्रिकल वेव्ज के बारे मे बहुत विस्तार से लेखक द्वारा लिखी गयी पुस्तक "आयुर्वेद के अमुलिक सिध्धान्तों का ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन अध्ध्यन" मे अवलोकन कर सकते है / फिर भी सन्क्षेप मे यहा किये गये अध्ध्य्यन का स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है /

चिकित्सा विग्यान मे मान्व फीजियोलाजी के रक्त वाहन सन्स्थान मे रक्त के सन्चार के बारे मे बताया गया है कि हृदय मे इलेक्ट्रिकल इम्पल्स का उदभव हृदय के ए०वी० नोड यानी आरीकुलर वेन्ट्रीकुलर नोड से उतपन्न होता है / यह एक तरह का तेज आवृत्ति का करेन्ट होता है जो एक मुश्त तेज झटके से पैदा होता है / यह क्यो और कैसे पैदा होता है इसके बारे मे फीजियोलाजिस्ट के अलग अलग मत है / कोई कहता है कि यह एक नेचुरल फेनामेना है और इसके बारे मे कोई जानकारी नही है कि यह क्यों औए कैसे पैदा होता है ? कुछ फीजियोलाजिस्ट क्ा मानना है कि हृदय की मान्शपेशिया की बनावट ऐसी होती है कि वे फडकती रहती है इसलिये ऐसा होता है /

हमारे रिसर्च सेन्टर मे किये गये अध्ध्य्यन मे जिस तरह के प्रमाण मिले है उसके बारे मे विस्तार से लेखक की पुस्तक मे बताया गया है कि यह सब कैसे होता होगा ? फिर भी सन्क्षेप मे यहा सन्दर्भित करना आवश्यक है ताकि पुन; स्मरण किया जाय /

मानव शरीर मे विद्युत का उत्पादन और सन्चय प्राकृतिक तौर पर जब तक जीवन होता है तब तक बना रहता है / आधुनिक खोजो के द्वारा यह पता चल गया है कि मानव शरीर एक और अनेक तरह के केमिकल से मिलकर बना है / ये सब वही तत्व है जो इस पृथवी पर पाये जाते है और इनसे ही जीवन मिलता है / शरीर मे विद्युत का जन्म आयनिक होती है जो सेल मे व्याप्त केमिकल अणुओ के कारण बनती है /

ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन का लोगो / यही लोगो सभी जगह प्रयोग किया जाता है /

हमारे द्वारा किये गये अध्ध्य्यन से यह धारणा बनी है कि इस विद्युत का अबन्टन उसी समय से हो जाता है जिस समय पुरुष का शुक्राण और महिला का अन्ड मिलते ही एक दूसरे से फ्यूज हो जाते है और एक मे मिल जाते है / जैसा कि सबको पता है कि विद्युत माइनस से होकर प्लस की तरफ जाती है / इस तरह से सन्चेतित शुक्राणु और अन्डाणु एक मिल जाते है और गर्भाशय की दीवाल से चिपक कर ग्रोथ करते है या विकास करते है और फिर एक निश्चित समय सीमा पूर्ण होने के बाद एक सम्पूर्ण मानव जीव का अत्यन्त छोटा आकार पृथ्वी पर जन्म लेता है जिसे पृथ्वी के तत्व पालन पोषण करते है और प्रकृति द्वारा प्रदत्त जीवन काल को जीते हैं अर्थात जीवन जीते है /
मानव शरीर मे विद्युत का सन्चरण हृदय के माध्यम से होता है / हृदय ही वह शरीर का हिस्सा है जो विद्युत की तरन्गों द्वारा सन्चालित होता है /
2
आधुनिक चिकित्सा शास्त्रियों द्वारा यह स्थापित किया जा चुका है कि मानव हृदय एक प्रकार के विद्युत करेन्ट के पैदा होने से ही धड़कता है और अपना कार्य सम्पन्न करता है /

चिकित्सा वैग्यानिकों का समझना है कि मानव हृदय मे विद्युत धारा एस० ए० नोड (साइनो आरीकुलर नोड) से पैदा होती है जो हृदय की एक मान्सपेशी मे जेनेरेट होती है / इसे मानव शरीर मे विद्युत पैदा होने का पहला स्थान कह सकते है अथवा यह कहा जा सकता है कि यह स्थान करेन्ट जेनेरेटर है /

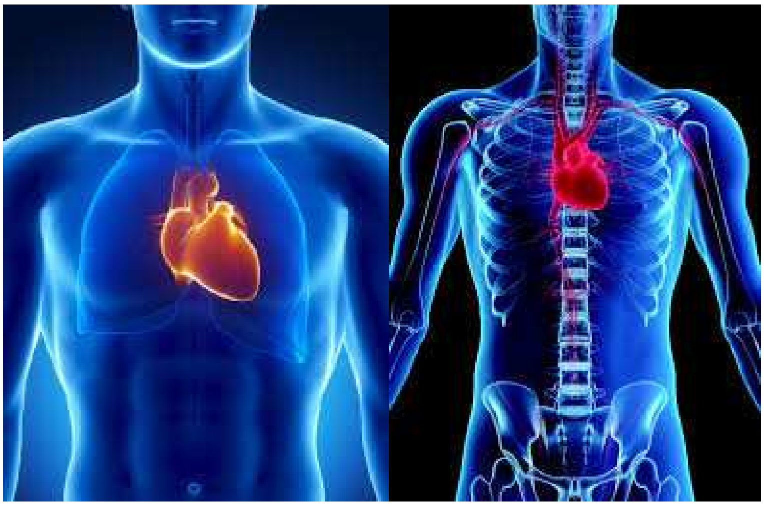

उपरोक्त चित्र मे मानव हृदय की शरीर मे स्तिथि को बताया गया है /
हृदय किस स्थान पर स्तिथि है और उसकी किस तरह की पोजीशन होती है /
चित्र मे हृदय की स्तिथि को दर्शाया गया है /

पहले स्थान से जेनेरेट की गयी विद्युत धारा इस स्थान से समाहित होती है / यह एकत्रित और समाहित विद्युत धारा एस० ए० नोड से एक तेज धड़का ए० वी० नोड (आरीकुलर वेन्ट्रीकुलर नोड) मे तेज करेन्ट के रूप मे पहुन्चता है , यह दूसरा स्थान है जहां तेज करेन्ट समाहित होता है / चिकित्सा वैग्यानिकों का समझना है कि मानव हृदय मे विद्युत धारा एस0 ए0 नोड से पैदा होती है जो हृदय की एक मान्सपेशी मे जेनेरेट होती है / एसo एo नोड से यह विद्युत का धड़का एo वीo नोड मे तेज करेन्ट के रूप मे पहुन्चता है , यह दूसरा स्थान है जहां पर मानव शरीर मे जेनेरेट विद्युत का प्रवाह बहुत तेज शक्ति से होता है / यहां से यही विद्युत का शक्तिशाली प्रवाह तीसरे स्थान पर पहुचता है जो अपेक्षाकृत पहले और दूसरे स्थान से ज्यादा अधिक विस्तारित स्थान लेता है और इसका दायरा भी हृदय के अन्ग मे अधिक दूर तक होता है , इस तीसरे स्थान को " बन्डल आफ हिज" कहते है /

पहले स्थान मे विद्युत का प्रवाह बहुत शक्ति शाली होता है जो दूसरे स्थान पर आते आते और अधिक शक्ति शाली हो जाता है, लेकिन इसकी शक्ति की तीव्रता तीसरे स्थान मे आते आते अपेक्षाकृत कुछ कमजोर हो जाता है और चौथे स्थान मे आते आते यह सारे शरीर मे ड्म्प हो जाता है यानी यह करेन्ट एक तरह से माइनस से होकर शरीर के पाजिटिव आयन्स की तरफ चला जाता है / चौथे स्थान को
"पर्किन्सन फाइबर" कहते है / वास्तव मे यह फाइबर बहुत महीन सूत्र के बने हुये होते है, जिनसे मानव विद्युत का प्रवाह महीन हिस्सों मे बन्टकर सारे शरीर मे फैल जाते है /
3
इस तरह से शरीर के अन्दर पैदा हुयी विद्युत धारा सारे शरीर मे फैल जाती है और मानव शरीर के सभी सेल्स और टीशूज और मानव के अन्गो को इनेगाइज कर देती है / यह एक तरह से कहा जाय कि शरीर की बैटरी चार्ज करने का प्राकृतिक तरीक कुदरत की तरफ से मानव जाति और जीवित पदार्थो को मिला हुआ है /

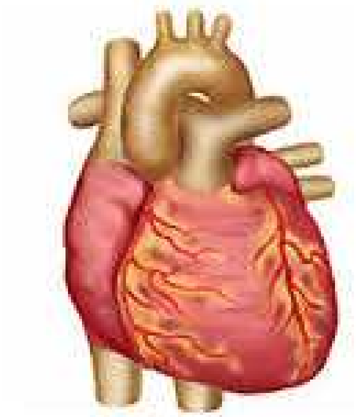

उपरोक्त चित्र मे मानव ह्रदय की बाहरी संरचना कैसी होती है, यह बताया गया है /
यह एक विशेष प्रकार की मान्शपेशियों के दवारा बना हुआ अन्ग है, इन मान्सपेशियों को
"कार्डियक मसल्स" कहते है / कार्डियक मसल्स मे स्तिथि विद्युत स्पार्क एस ए नोड से ए वी नोड
और ए वी नोड से बन्डल आफ हिज और फिर बन्डल आफ हिज से पार्किन्ज फाइबर
तक फैल जाती है / इसके बाद विद्युत के मालीक्यूल्स सारे शरीर मे इम्प हो जाते है ,
जो शरीर के अन्गो की क्रिया और प्रतिक्रिया को सेल और टिश्यू और पूरे अन्ग को
उर्जावान बनाती है और जीवन देती है /

पान्चवां कार्य सम्पन्न होने के लिये मेरा मानना है कि चौथे स्थान के विद्युतीय फैलाव को समेटने के लिये शरीर की अति सूच्छम रक्त वाहिनियां जो लिम्फैटिक सिस्टम और आटोनामिक नरवस सिस्टम और सर्कुलेटरी सिस्टम से आपस मे जुड़ी हुयी होती है , इन के द्वारा सामूहिक रूप से विद्युत के मालीक्यूल्स और एटम तथा आयन्स अन्गो और दूसरे शरीर के प्रत्यन्गो के सेल्स और टिशूज मे पहुचते होन्गे, ऐसा मेरा विचार है /

मेरा मानना है जैसा कि मैने ऊपर कहा है, यह उन प्रयोगो पर आधारित है , जो मेरे द्वारा पिछले कुछ दशको से किये जा रहे है / यह प्रयोग आयुर्वेद के सिध्धान्तो पर आधारित होकर किये गये है /

इन प्रयोगो को करने के बाद जिस तरह के निष्कर्ष निकाले गये है, उनसे यह सिध्ध करने का प्रयास किया गया है कि मानव शरीर के अन्दर मे व्याप्त विद्युत ही मानव का जीवन और मृत्यु का निर्धारण करने मे बहुत बड़ा योगदान है / आयुर्वेद के विग्यान मे वर्णन किये गये सिद्धान्तों का इलेक्ट्रिकल स्कैन का अविष्कार जिसे " इलेक्ट्रो त्रिदोष ग्राफी / ग्राम आयुर्वेदास्कैन" या ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन" के नाम से जानते है / यह तकनीक मानव शरीर की विद्युतीय रिकार्डिन्ग की तकनीक पर आधारित है /

आयुर्वेद का इलेक्ट्रिकल रिकार्डर

आधुनिक आयुर्वेद की हाई-तेक्नोलाजी ईलेक्ट्रो त्रिदोष ग्राफ जिसे सन्क्षेप मे ई०टी०जी० भी कहते है ,आयुर्वेद का एक स्कैनिन्ग सिस्टम है ,जिसे भारत के शहर कानपुर मे स्थिति आयुर्वेद चिकित्सक डा० देश बन्धु बाजपेयी द्वारा अन्वेषित किया गया और बाद मे इन्ही के द्वारा तकनीक का विकास किया गया / वर्तमान मे डा० देश बन्धु बाजपेयी द्वारा इस तकनीक को और अधिक बिस्तार से विकसित किया जा रहा है /

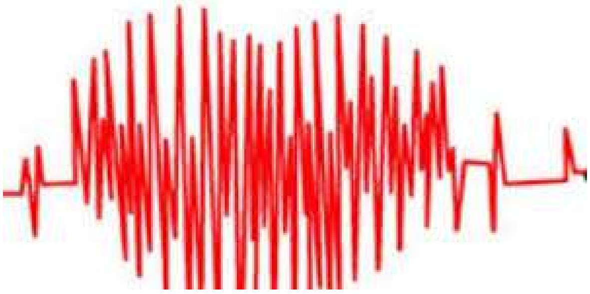

ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन मशीन के दो सन्सकरण अभी तक विकसित किये गये है / एक मशीन गैलवनोमीटर के सिध्धान्त पर आधारित है जब कि दूसरी मशीन साधारण मीटर की रिकारडिन्ग के सिध्धान्त पर आधारित है / इन दोनो का रिकार्डिन्ग पैटर्न उपरोक्त चित्र मे दर्शाया गया है / यह रिकार्डिन्ग हारीजेन्टल और वर्टीकल पैटर्न पर की जाती हैं / इन्ही रिकार्द की गयी वेव्ज का अध्ध्य्यन करते है /

इलेक्ट्रिकल रिकार्डर बहुत तरह के होते है और अलग अलग काम के लिये निर्धारित करके इनका निर्माण किया जाता है / इलेक्ट्रिकल रिकार्डर औद्योगिक और मेडिकल और इन्वायर्मेन्टल और स्पेस और इलेक्ट्रानिक्स के अलावा अन्य तमाम कार्यों और क्षेत्रों मे उपयोग किये जा रहे है / इलेक्ट्रिकल रिकार्डर दो तरह के होते है / एक वह जिनको "'एनालाग"" रिकार्डर कहते है और दूसरे वह जिन्हे "डिजिटल" रिकार्डर कहते है / यह इस्तेमाल करने वाले के ऊपर निर्भर करता है कि उसे किस तरह का रिकार्डर अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयोग करना चाहिये जिसमे सुविधा हो और आसानी हो /

आयुर्वेद के लिये जिस इलेक्ट्रिकल रिकार्डर का उपयोग करते है उसमे एनालाग और डिजिटल दोनो ही तरह के रिकार्डिन्ग उपकरणो का उपयोग किया जाता है / ये उपकरण आवश्यकता के अनुसार जहां जिस तरह की जरूरत होती है वहां उसी तरह के उपकरण का उपयोग करते है /

**यह मशीन एक प्रकार का गैल्वनिक वेव्ज रिकार्डर है / यह विश्व की एक अत्याधुनिक मशीन है /
ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन के परीक्षण के लिये इस मशीन मे परिवर्तन किये गये हैं
जो आयुर्वेद के दृष्टिकोण से किये गये हैं /**

ऊपर दि्खाये गये चित्र मे डिजिटल इलेक्ट्रिकल रिकार्डर को दर्शाया गया है / इस रिकार्डर का नाम ""ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन" है जिससे मानव शरीर के सभी अन्गो का परीक्षण आयुर्वेद के दृष्टिकोण से करते है / यह रिकार्डर उपकरण हाई प्रोफाइल टेक्नोलाजी से युक्त है और यह एक कम्प्यूटर से जुडा हुआ होता है जिसमे कई तरह के साफ्टवेयर मौजूद होते है / जहां रिकार्ड की गयी सब चीजों का प्रोसेसिन्ग करती है और सबसे अन्त मे शरीर की स्तिथि की जानकारी कई रिपोर्टस के रूप मे मिल जाती है और सभी रिपोर्टो को छापकर स्थायी रिकार्ड मिल जाता है /

**उपरोक्त चित्र मे एक मरीज का रिकार्ड करते हुये ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैनर मशीन और
मरीज के शरीर मे लगाये गये इलेक्ट्रोड्स दिखाई दे रहे है / मानव शरीर का
आयुर्वेदिक परीक्षण इसी तरह से किया जाता है /**

आयुर्वेद ग्रन्थों मे बर्णित मानव शरीर के हिसाब से

स्थानों का चयन और उनका नाप-जोख

आयुर्वेद के ग्रन्थों मे मानव शरीर को आयुर्वेद के मतानुसार दोष आदि वर्गों में जिस तरह से विभाजित किया गया है और उनके स्थान शरीर मे कहां कहां है , यह निर्धारित किये गये हैं, और इसकी व्याख्या भी की गयी है / माधव निदान और चरक और सुश्रुत और वाग्भठ्ठ आदि आयुर्वेद के ग्यानियों ने अपने द्वारा लिखित और रचित ग्रन्थों मे इसका वर्णन किया है /

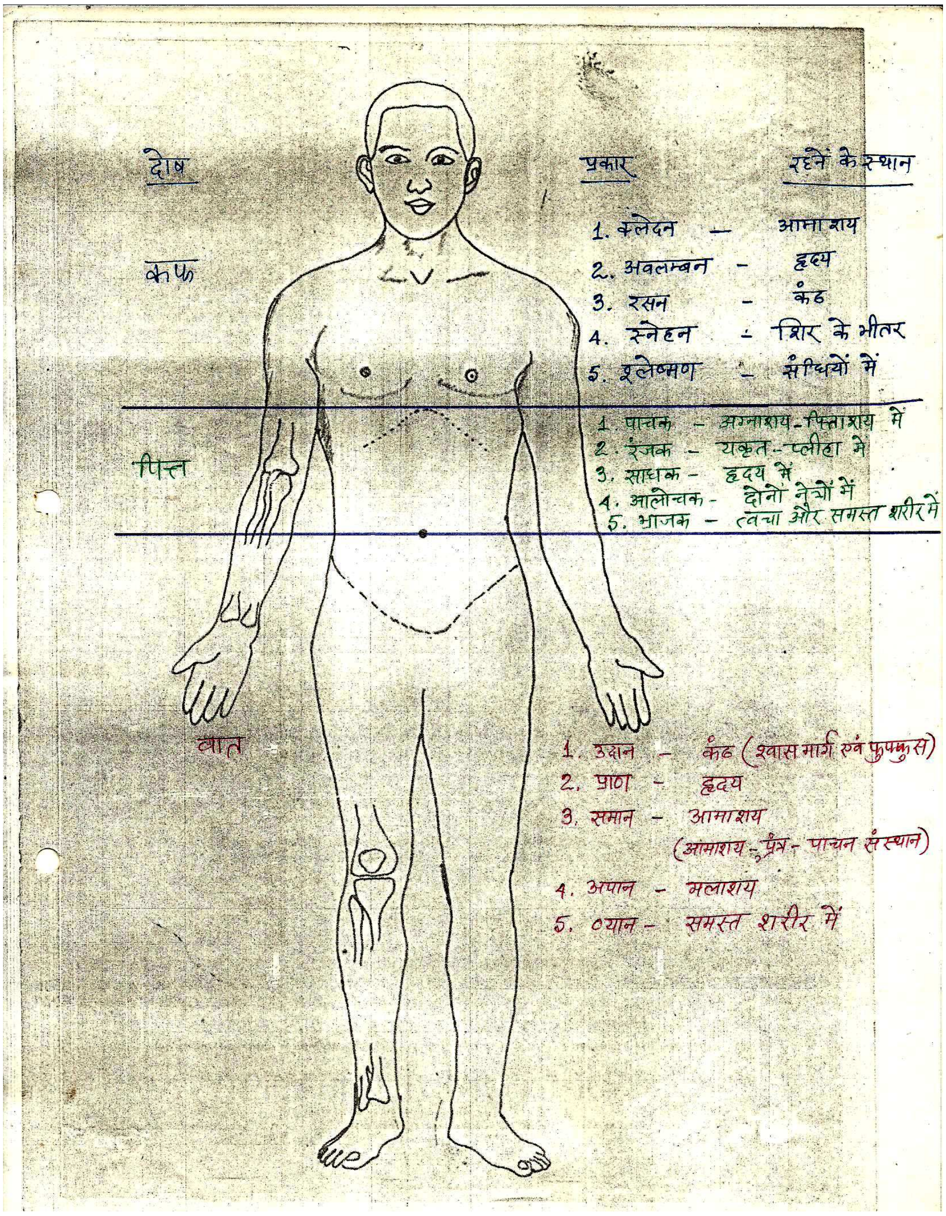

ऊपर के चित्र मे आयुर्वेद के अनुसार शरीर का विभाजन किया गया है , जैसा कि आयुर्वेद के ग्रन्थों मे बताया गया है / मानव शरीर को स्थूल स्वरूप मे तीन दोषों को ग्यात करने के लिये और स्थापित करने के लिये तीन हिस्सों मे बान्टा गया है /

7

त्रिदोष शरीर मे कहां कहां स्थापित किये गये है और वे किस तरह शरीर की क्रिया मे हिस्सा लेते है , यह ऊपर के चित्र मे बताया गया है /इस चित्र मे दर्शाये गये भागों को देखने से पता चलता है कि आयुर्वेद के महर्षियों नें आयुर्वेद के सिध्धान्तों के अनुसार शरीर को किस तरह बान्टा है यानी शरीर की दोषानुसार

मैपिन्ग की है / ऊपर का हिस्सा कफ दोष के लिये निर्धारित किया गया है ,बीच का हिस्सा पित्त दोष के लिये निर्धारित किया गया है और कमर से नीचे का हिस्सा वात दोष के लिये निर्धारित किया गया है / ऐसा निर्धारण आयुर्वेद के शास्त्रोक्त ग्रन्थों मे बताया गया है / भाव प्रकाश ग्रन्थ के अलावा चरक और सुश्रुत मे इस तरह के शरीर के विभाजन के बारे मे विस्तार से बताया गया है /

मूल रूप से शरीर मे दोष निर्धारण के अलावा प्रत्येक तीनों दोषों के पान्च पान्च भेद भी निर्धारित किये गये है / इस तरह के विभाजन का सूच्छम अध्ध्य्यन करने के बाद यह पता चलता है कि यह विभाजन आधुनिक फीजियोलाजी से मिलता जुलता है इसलिये इसे क्रुड स्तर पर आयुर्वेदिक फीजियोलाजी का दर्जा दे स्कते है या आयुर्वेद की फीजियोलाजी कह सकते है / ऊपर के चित्र मे यह बात बताने का प्रयास किया गया है कि दोषो के पान्च पान्च भेद क्या है और उनके किस नाम से उच्चारण करते हैं /

आयुर्वेद का इलेक्ट्रिकल रिकार्डर पूरे शरीर का परीक्षण करता है / क्योन्कि जब तक पूरे शरीर का परीक्षण नही होगा तब तक त्रिदोषो का आन्कलन नही किया जा सकेगा / इसीलिये आयुर्वेद के विधि विधान के अनुसार ही इस तकनीक का विस्तार किया गया है / शरीर की मैपिन्ग कई बातो को ध्यान मे रखकर की गयी है / इस मैपिन्ग के लिये आधुनिक मेडिकल साइन्स का भी समन्वय किया गया है ,इस समन्वय मे शरीर की एनाटामी और फीजियोलाजी और पैथोलाजी और मेडिसिन और गायनेकोलाजी आदि विषयों का समावेश किया गया है / यह आधुनिक चिकित्सा विग्यान के विषयों का समावेश के साथ आयुर्वेद के ग्यान का समावेश करके हाइब्रिड तकनीक का आविष्कार किया गया है /शरीर के ऊपरी हिस्से मे कफ दोष और शरीर के मध्य हिस्से मे पित्त दोष और शरीर के नीचे के हिस्से मे वात दोष स्थापित होते है /

आयुर्वेद ने प्रत्येक दोष के पान्च पान्च विभाजन किये है / यानी दोषो का वर्गीकरण उनके कार्यों के अनुसार बताया गया है / जैसा कि नीचे की सारिणी मे देखा जा सकता है /कफ दोष शरीर के ऊपरी हिस्से मे आयुर्वेद के अनुसार आयुर्वेद के मनीषियों के द्वारा स्थापित किया गया है / जिसका ताल्लुक सान्खय दर्शन से भी है /

यहां "कफ दोष" के बारे मे बताया जा रहा है जिसमे यह महत्व्पूर्ण है कि कफ दोष आयुर्वेद के अनुसार शरीर के किन किन हिस्सों में विद्यमान है /

1- कफ दोष के पान्च भेद ;(अ) श्लेष्मन (ब) स्नेहन (स) रसन (द) अवलम्बन (य) क्लेदन

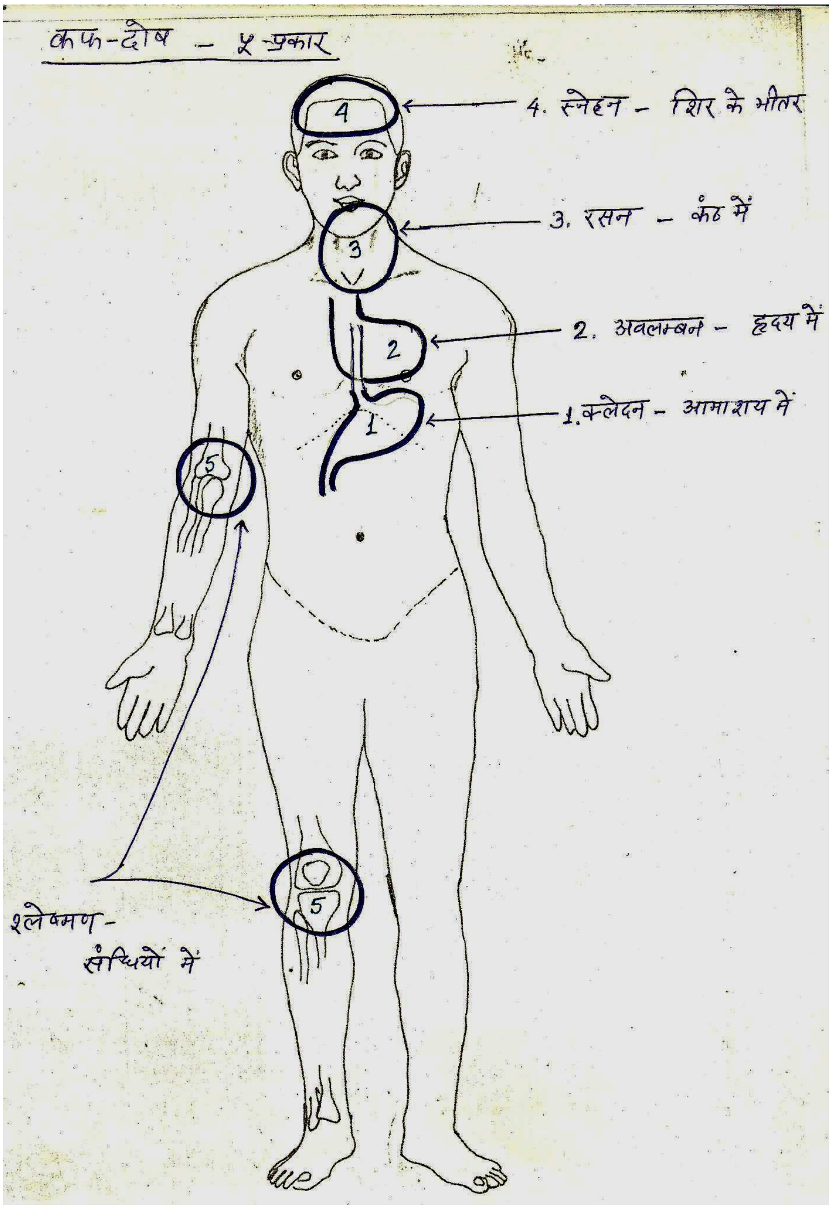

ऊपर के वित्र मे यह बताने का प्रयास किया गया है कि कफ दोष शरीर मे कहां पर है और उनके भेद जो सन्ख्या मे पान्च हैं वे शरीर के किस स्थान पर स्तिथि हैं /दर्शाये गये स्थानों को एनाटामी और फीजियोलाजी और प्रैक्टिस आफ मेडिसिन के दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है /

ऊपर के दर्शाये गये चित्र मे यह स्पष्टता दिखाई दे रही है कि कफ दोष का निर्धारण करने के पीछे महर्षियो की क्या मन्शा थी / ऐसा प्रतीत होता है कि वे सभी अन्ग कफ दोष के अन्तर्गत मान लिये गये है जिनका समबन्ध किसी न किसी तरह से म्यूकस मेम्ब्रेन की सतह से होता हो या जहा म्यूकस जैसा पदार्थ एकत्र रहता हो /

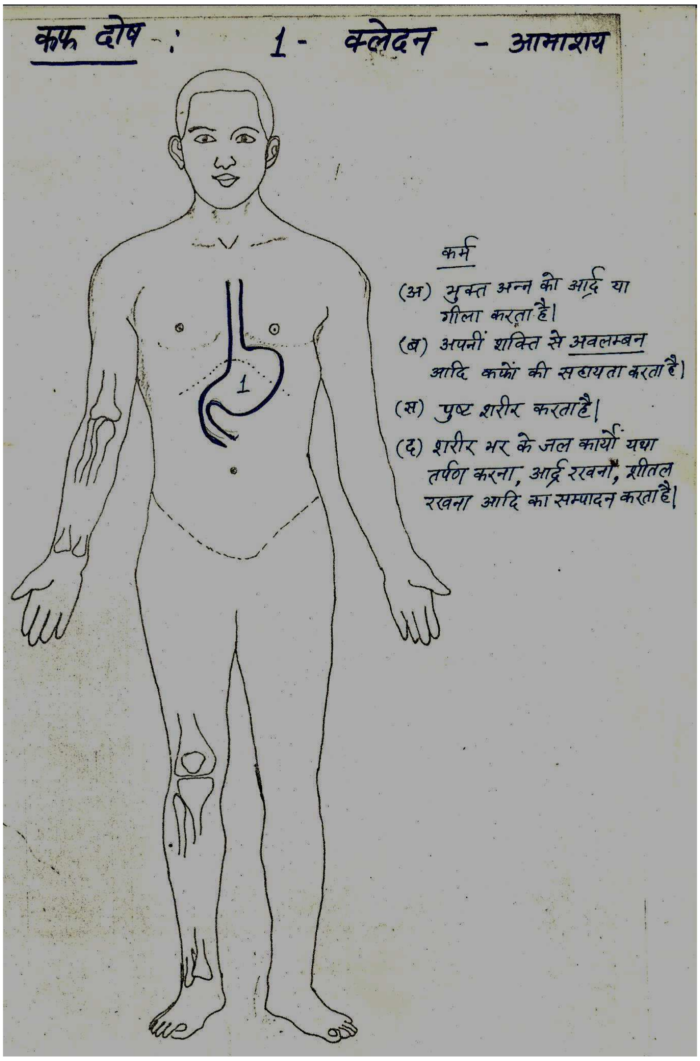

कफ दोष के पान्च भेदों मे से एक भेद "क्लेदन कफ" का निर्धारण आयुर्वेद के मनीषियों ने निम्नानुसार किया है / यद्यपि इसे आमाशय के लिये निर्धारित किया है लेकिन इसके पीचे का विग्यान - अनुमान यह विचार कर किया गया होगा क्योन्कि आमाशय की कार्य प्रणाली मे श्लेष्मा अथवा म्यूकस मेम्ब्रेन का महत्व पूर्ण रोल होता होगा / पहला वैग्यानिक-अध्ध्य्यन यह होगा कि क्लेदन कफ का कार्य खाद्य पदार्थ अथवा खाये गये अन्न को गीला करता है यानी कम गीले पदार्थ को और ज्यादा गीला करे यानी तरल से अधिक तरल बनाने का प्रयास करता है /
दूसरा यह कि कफ भेद "अवलम्बन" को कार्य करने मे सहायता पहुन्चाता है / तीसरा यह कि यह शरीर को पुष्ट करता है और चौथा कार्य यह कि शरीर के अन्दर पानी की कमी न होने पाये और शरीर का तापमान सामान्य बना रहे और शरीर मे आर्दता बनी रहे, यह कार्य करता है / आधुनिक मेडिकल साइन्स के हिसाब से देखें तो यह कार्य भोजन का चाइम बनाने और शरीर को पानी की आवश्यकता के समय "प्यास" का अनुभव कराने और चाइम का आन्तों मे जाकर आन्तो द्वारा भोजन का सार भाग चूसकर शरीर को पोषण देने से समबन्धित होता है /

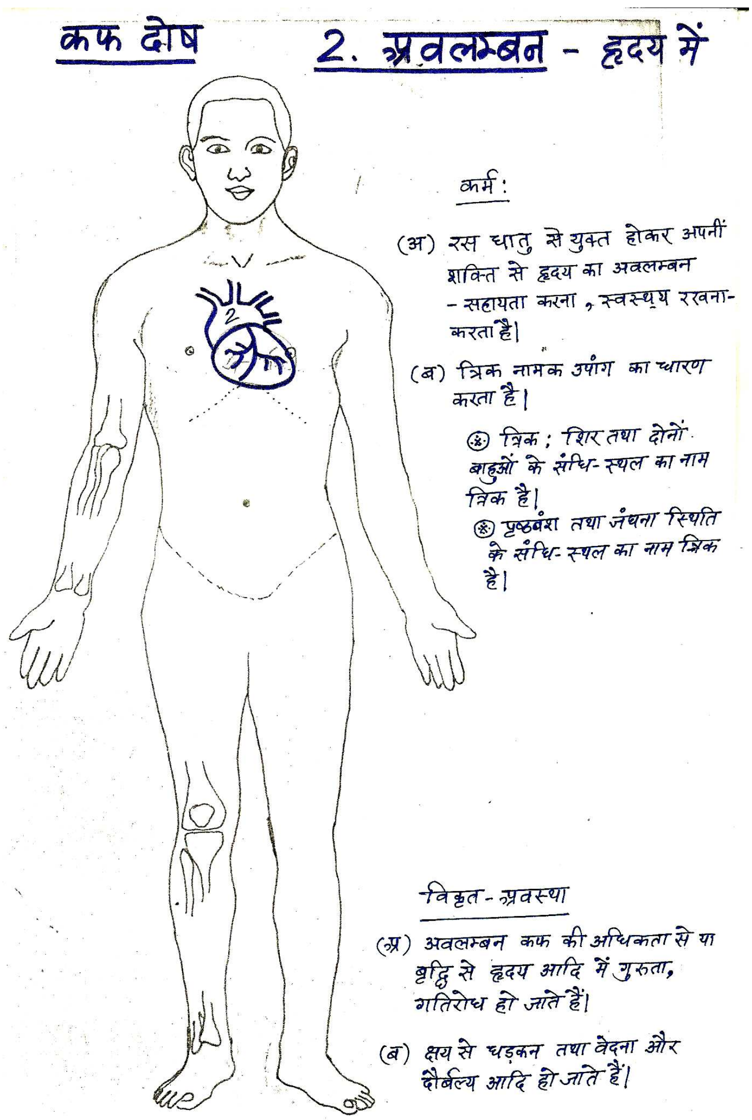

कफ दोष के पान्च भेदों में से दूसरे भेद "अवलम्बन कफ" के बारे मे आयुर्वेद के महर्षियों ने बताया है कि यह कफ का स्थान हृदय मे स्तिथि है / इसके कार्य के बारे मे बताया जाता है कि यह आयुर्वेद मे कही गयी सात धातुओं मे से एक रस धातु का ग्रहण करता है और ग्रहण किये गये रस से हृदय का अवलम्बन करता है / इसके अलावा त्रिक स्थान यानी दोनों कन्धे से लेकर पूरी गरदन और सिर के सभी अन्गो का अवलम्बन करता है / इसके द्वारा फेफड़ो तथा ट्रैकिया के अन्दर म्यूकस मेम्ब्रेन की कोटिन्ग, गले के अन्दर को गीला बनाये रखने के लिये स्लेवरी ग्लैन्ड्स और नाक, कान, आन्ख आदि को अर्दता यानी गीला बनाये रखने के लिये तथा मष्तिष्क मे पिया मैटर और पाया मैटर का सन्तुलन बनाये रखने के लिये इस कफ भेद को कार्य कारी समझा गया है / यह हृदय के पेरीकार्डियम और अन्य अवयवों को आर्द बनाये रकहे के लिये मुख्य रूप से निर्धारित किया गया है /

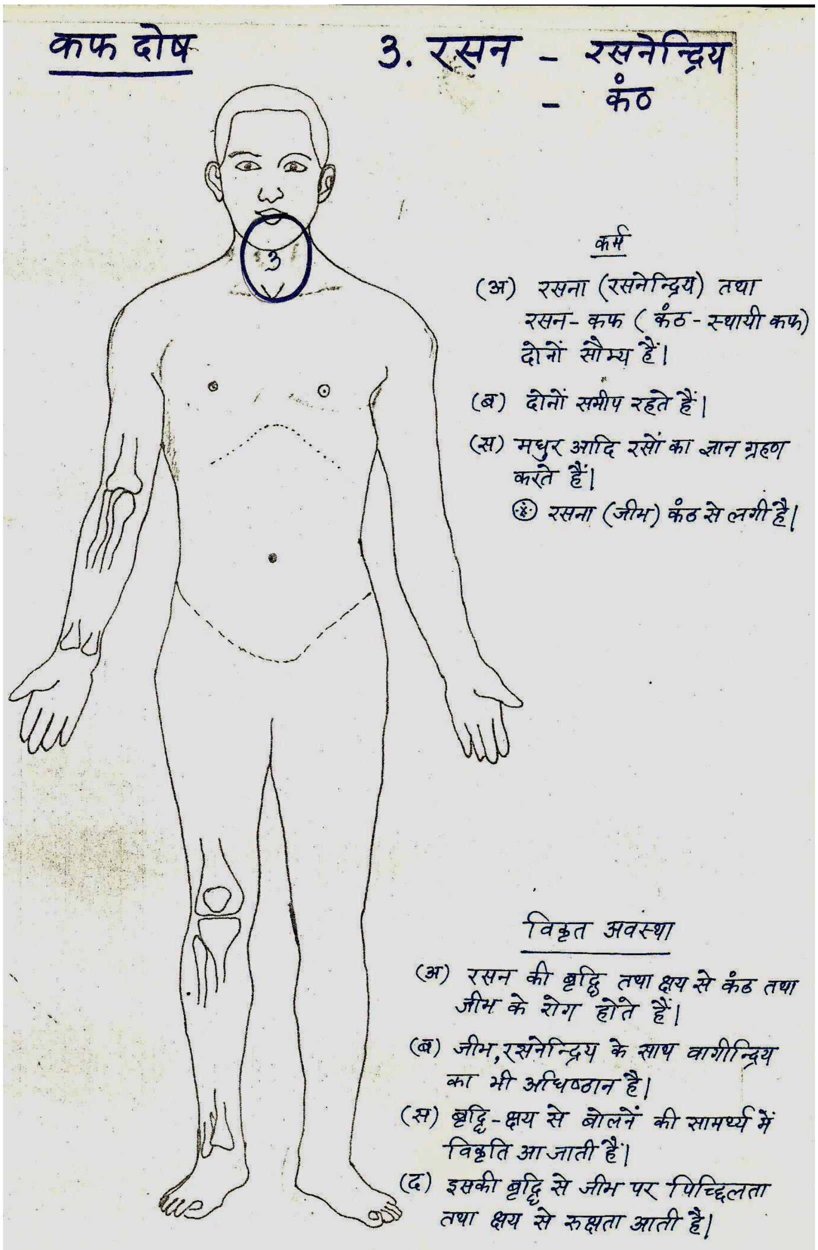

रसन कफ जीभ अथवा जिव्हा से जुडा होने के कारण इसका विवेचना क्षेत्र मुख, जीभ, दान्त, गला, तालू और इससे सम्बन्धित अन्गों से जुड़ा हुआ होता है / यह कफ भेद इन अन्गो को नियन्त्रित करता है /रसन कफ के बारे मे आयुर्वेद के मनीषियों ने निर्धारित किया है कि यह कफ भेद जिव्हा यानी टन्ग से सम्बन्धित माना है / जिव्हा का करेक्टेरिस्टिक्स समझने के बाद यह कफ भेद बहुत कुछ मानव जीवन के लिये अति महत्व पूर्ण माना गया है / जैसा कि आयुर्वेद के जानकारो का मानना है कि आयुर्वेद के ग्रन्थ को सूत्रों मे लिखा गया है / यह ग्यान का अति सूक्षम स्वरूप है / जिस समय लेखन विधियों का आविष्कार हुआ होगा उस समय श्रुति और मनन और स्मृति के बल पर ही ग्यान का सन्चय किया जाता होगा ऐसा समझा जाता है / जिव्हा को सन्सकृत मे "रसना" कहते है जिसका मतलब है स्वाद की पहचान करने वाला अन्ग / यद्यपि इसका मतलब बहुत विषद स्वरूप मे है क्योन्कि सूक्षम सूत्रों मे छिपे हुये मूल भावार्थ या अर्थ को समझने के लिये किये जाने वाली व्याख्या या सम्बन्धित विषय की विवेचना का द्वार खुला होता है और की जाने वाली विवेचना की कोई सीमा नही होती है /

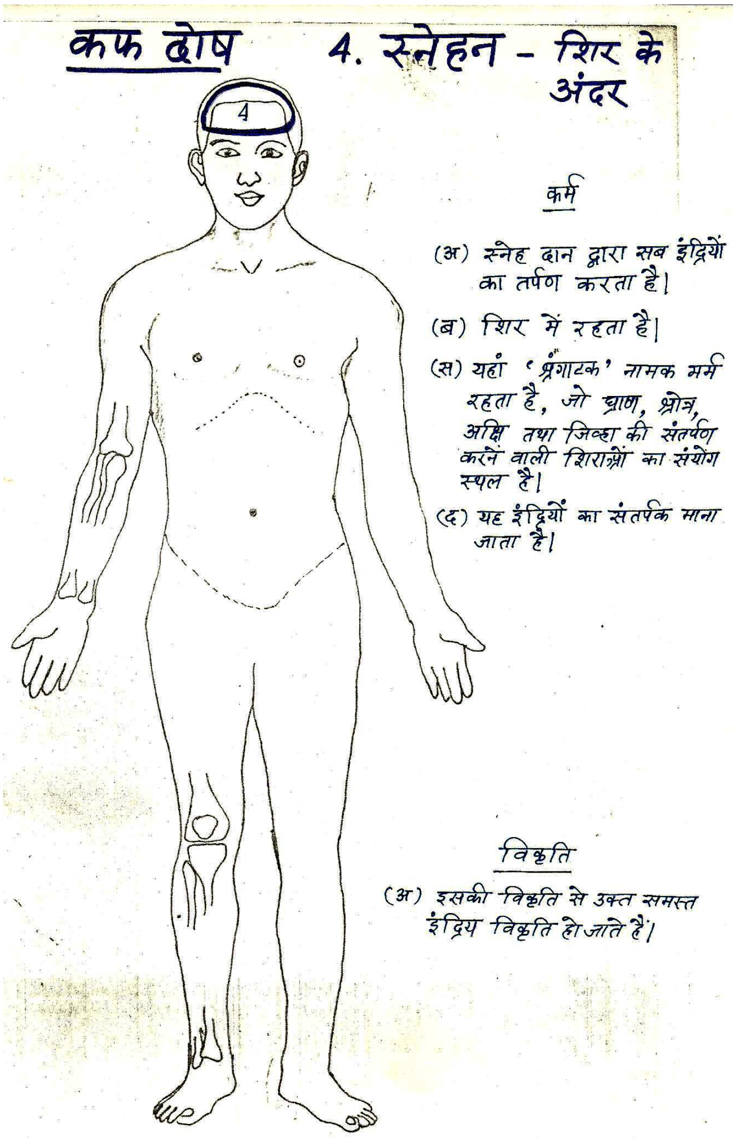

कफ के इस भेद को "स्नेहन कफ" भेद के नाम से जानते हैं / यह कफ भेद सिर के नदर रहता है और मष्तिष्क की रक्षा करता है और मष्तिष्क के पोषण के लिये आवश्यक तत्व प्रदान करता है , जिससे मह्तिष्क से जुडी हुयी जितनी भी फैकल्टीज है उनका रक्षण किया जा सके /मष्तिष्क के अन्दर रहने वाला "पाया मैटर" और "पिया मैटर" श्लेष्मन कफ भेद के कार्य क्षेत्र मे आता है / इसका काम मष्तिष्क को सुरक्षित रखने मे सहायता करना है / यह कफ जहां से और जिस स्रोतों से मष्तिष्क में आता है यह सब अन्ग इसके कार्य क्षेत्र मे आते है /

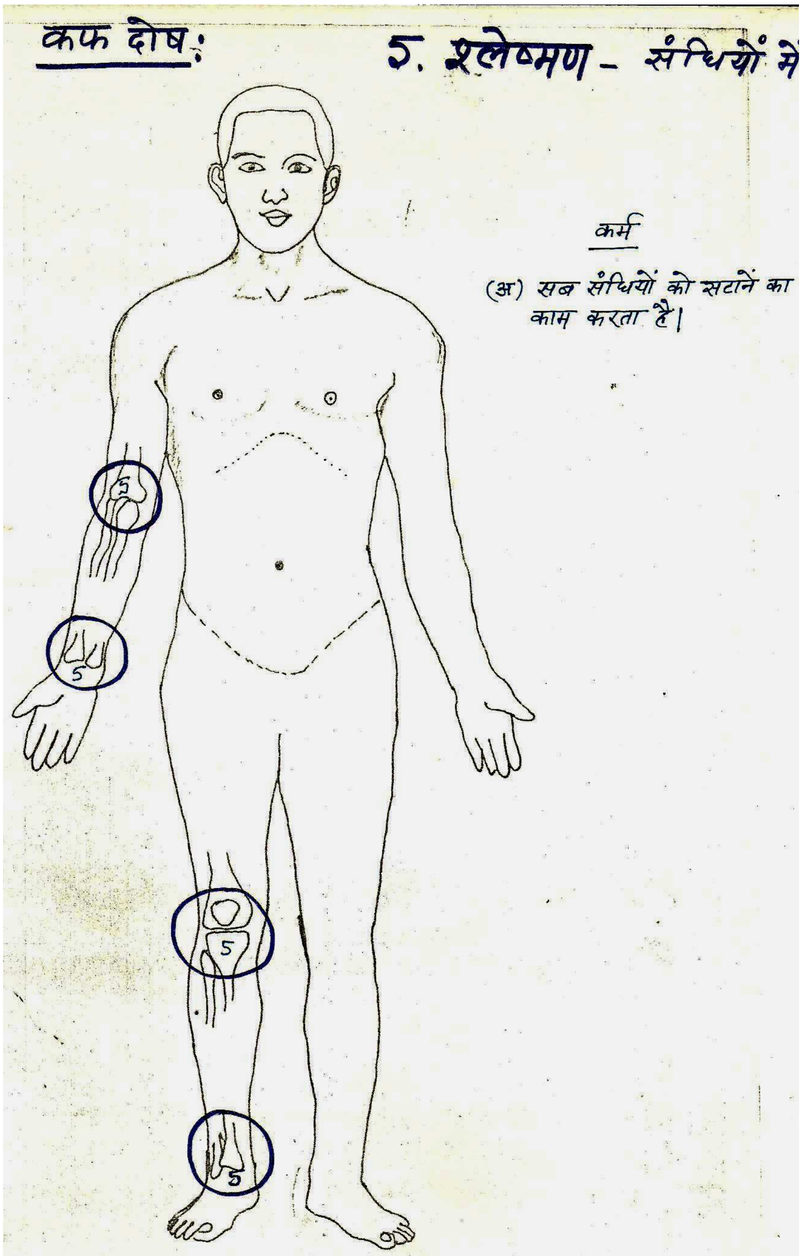

श्लेष्मन कफ शरीर के सभी जोड़ो मे रहता है चाहे वे कितने भी छोटे हो या कितने भी बड़े हों / इसे आधुनिक फीजियोलाजी विग्यान के दृष्टिकोण से देखें तो यह सायनोवियल फ्लूइड के समकक्ष और बराबर के स्तर की सन्ज्ञा दे सकते हैं /इस कफ भेद का काम शरीर की दो हड्डियों के जोड़ों के बीच मे गाढा और चिकना तथा मुलायम कठोर पदार्थ का बनाना और इसी पदार्थ को दोनो जोड़ों के बीच के सन्धि स्थल को ्भरना है /हड्डियों के दो जोड़ों के बीच मे यह कफ भेद पाया जाता है और इसका कार्य क्षेत्र भी इन्ही स्थानो पर है /

पित्त दोष के पान्च भेद ; (अ) साधक (ब) पाचक (स) रन्जक (द) भ्राजक (य) लोचक

पित्त दोष के ये पान्च पान्च भेद किस स्थान मे रहते है, यह नीचे के चित्र मे दर्शाया गया है /

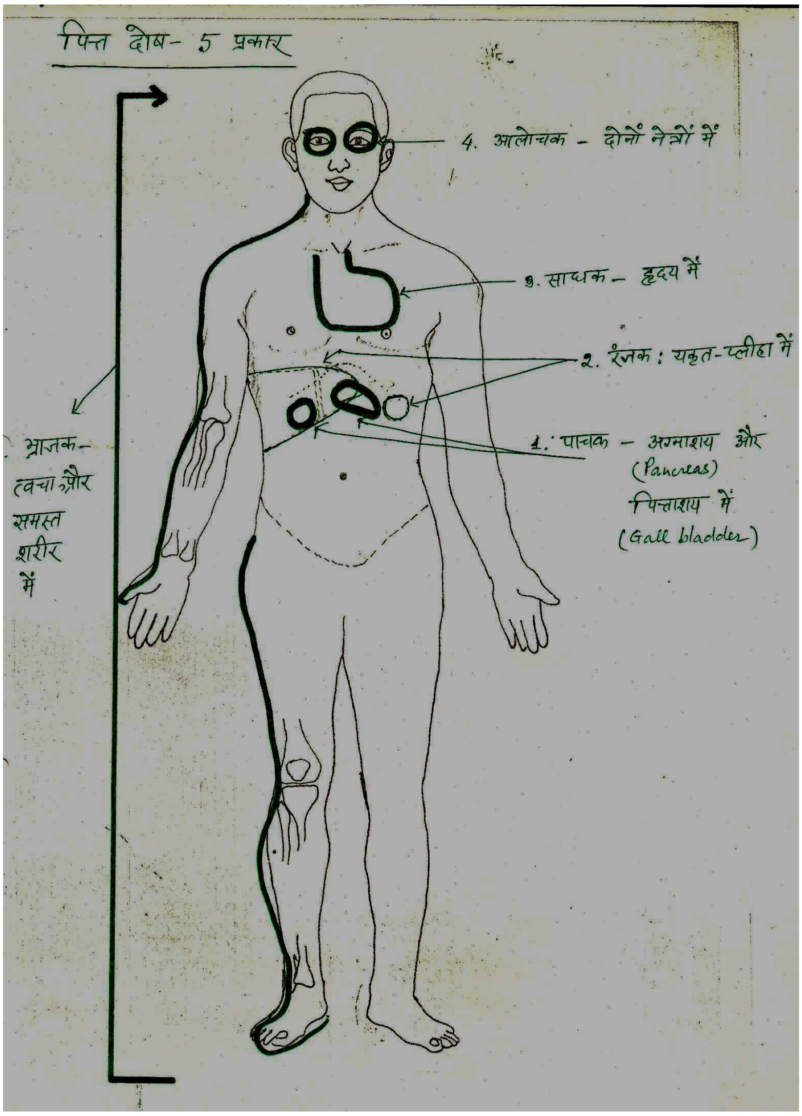

पित्त के पान्च भेदो का स्थान कहां कहां पर स्तिथि है, यह ऊपर के चित्र मे दर्शाया गया है / आयुर्वेद के ग्यानियों नें पित्त के भेदों को उनके कार्यो को ध्यान मे रखकर इस तरह का विभाजन करना उचित समझा होगा / इस विभाजन को आज के यानी आधुनिक फीजियोलाजी के सन्दर्भ मे कन्जोइन्ड करके देखे तो इन सबके बहुत विषद वर्णन होन्गे / जैसा कि सन्स्कृत भाषा मे सूत्र स्वरूप मे लिखने की परम्परा रही है / सूत्रों की व्याख्या और विवेचना कैसे कर सकते है यह उस विवेचना करने वाले व्यक्ति की बौध्धिक क्षमता पर आश्रित होता है / इसलिये सन्स्कृत मे लिखी गयी पुस्तके सूत्र रूप मे है और इनका गूढार्थ समझने के लिये उसी स्तर के मानसिक क्षमता की आव्श्यकता होती है /

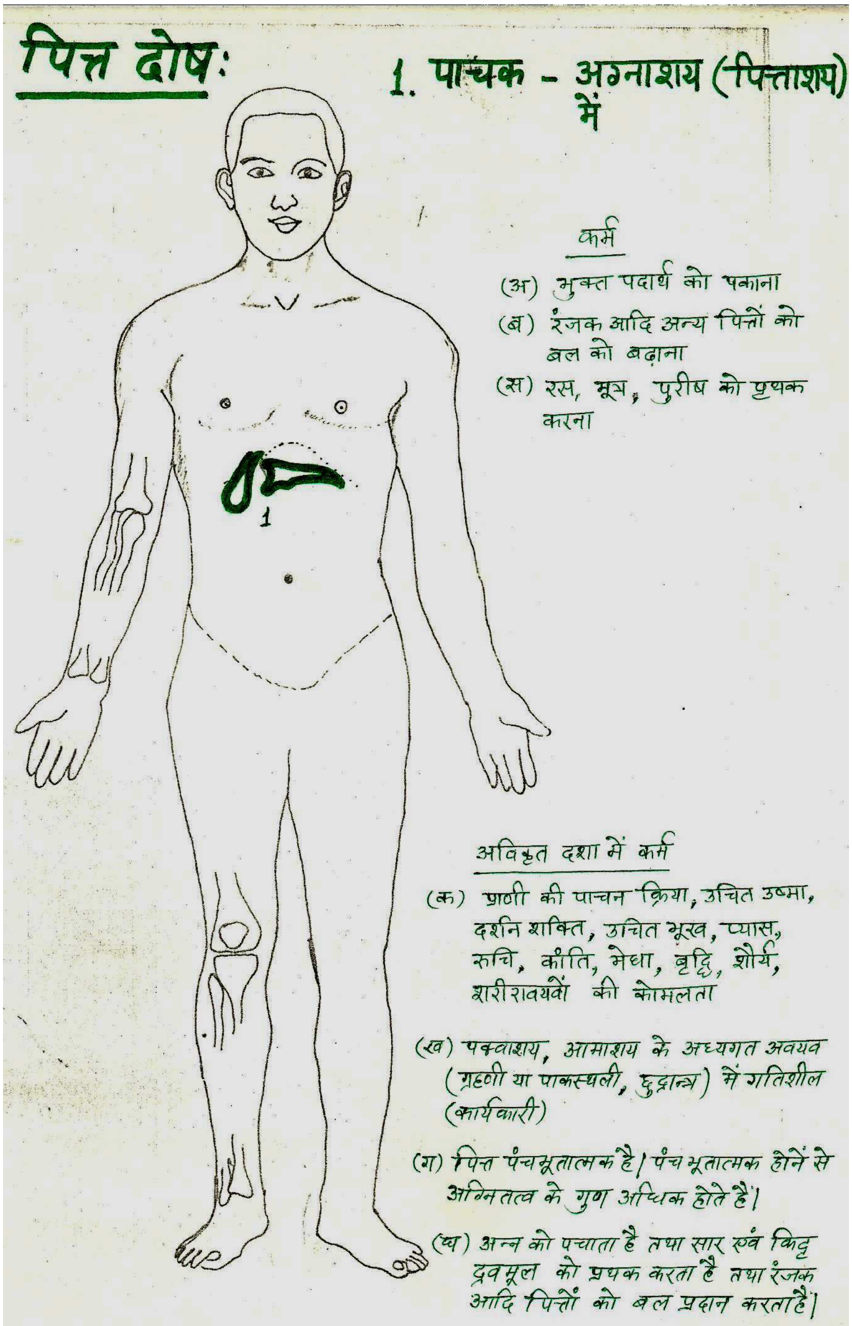

पित्त भेद पाचक के बारे मे समझना यह जरूरी है कि आयुर्वेद के शास्त्रग्यों नें किस तरह से इस पित को पाचन क्रिया से जोड़कर इसे ”पाचक पित्त” का नाम दिया है / आधुनिक चिकित्सा विग्यान के हिसाब से देखें तो यह तर्क सन्गत लगता है / ”पाचक पित्त” शरीर के दो अन्गो को तीसरे अन्ग से मिलने वाले स्थान के कारण नाम दिया गया है / गाल-ब्लैडर और पैन्क्रियाज की नलिकाये तीसरे स्थान छोटी आन्त की शुरू के यानी द्युडनम और जेजुनम के थोड़ा हटकर नीचे की ओर आकर जुड़ती हैं / इनका काम पाचक रस भोजन मे मिलाना होता है / यद्यपि इसका विवेचन इन अन्गो से जुड़ा होने के कारण अधिक विशद हो जाता है /

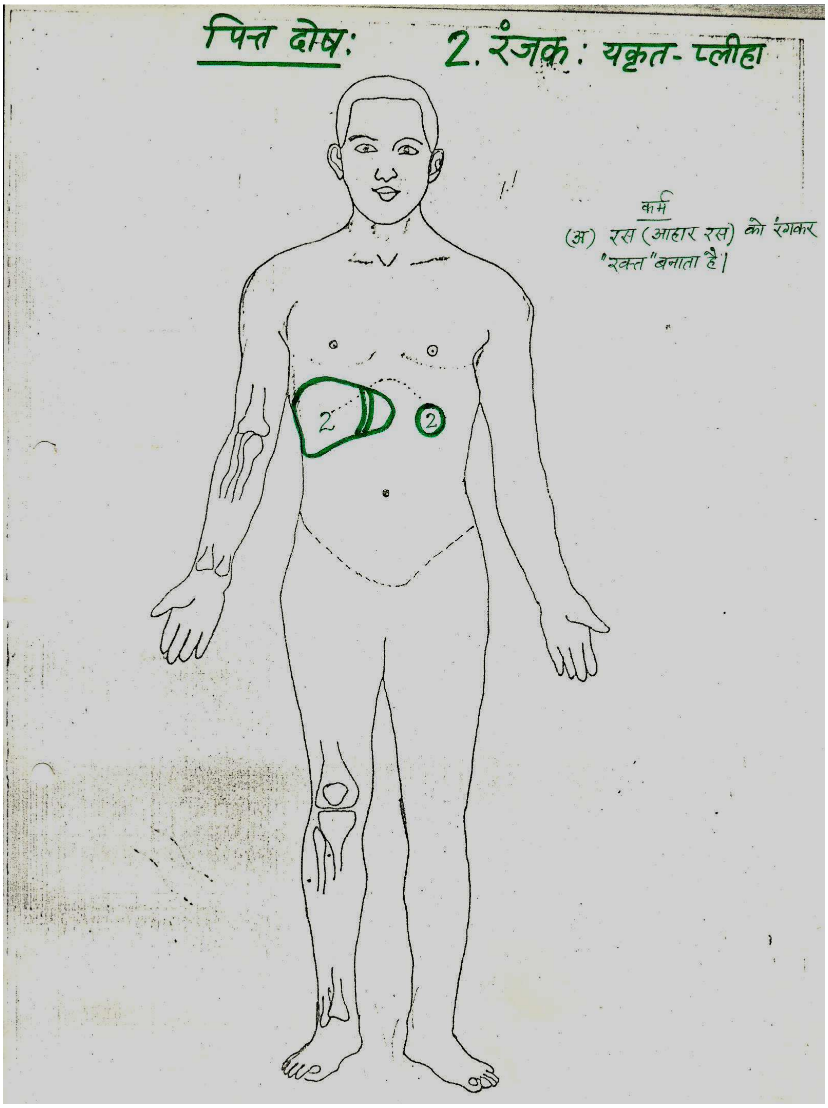

"रन्जक पित्त" आयुर्वेद के पित्त के पान्च भेदो मे दूसरा भेद जाना जाता है / यह यकृत और प्लीहा को जोड़कर बनता है और शरीर का रन्जन करता है / इसके बारे मे यह विचार किया गया है कि यह शरीर मे "रस" धातु को "रक्त" धातु मे परिवर्तित करता है / यह इसलिये सही लगता है क्योन्कि खाया गया अन्न के पोषक तत्व आन्तो द्वारा चूसकर लीवर यानी यकृत मे ही सन्चित होते है जिन्हे प्लीहा द्वारा सारे शरीर मे लिम्फ द्वारा भेजी जाती है /

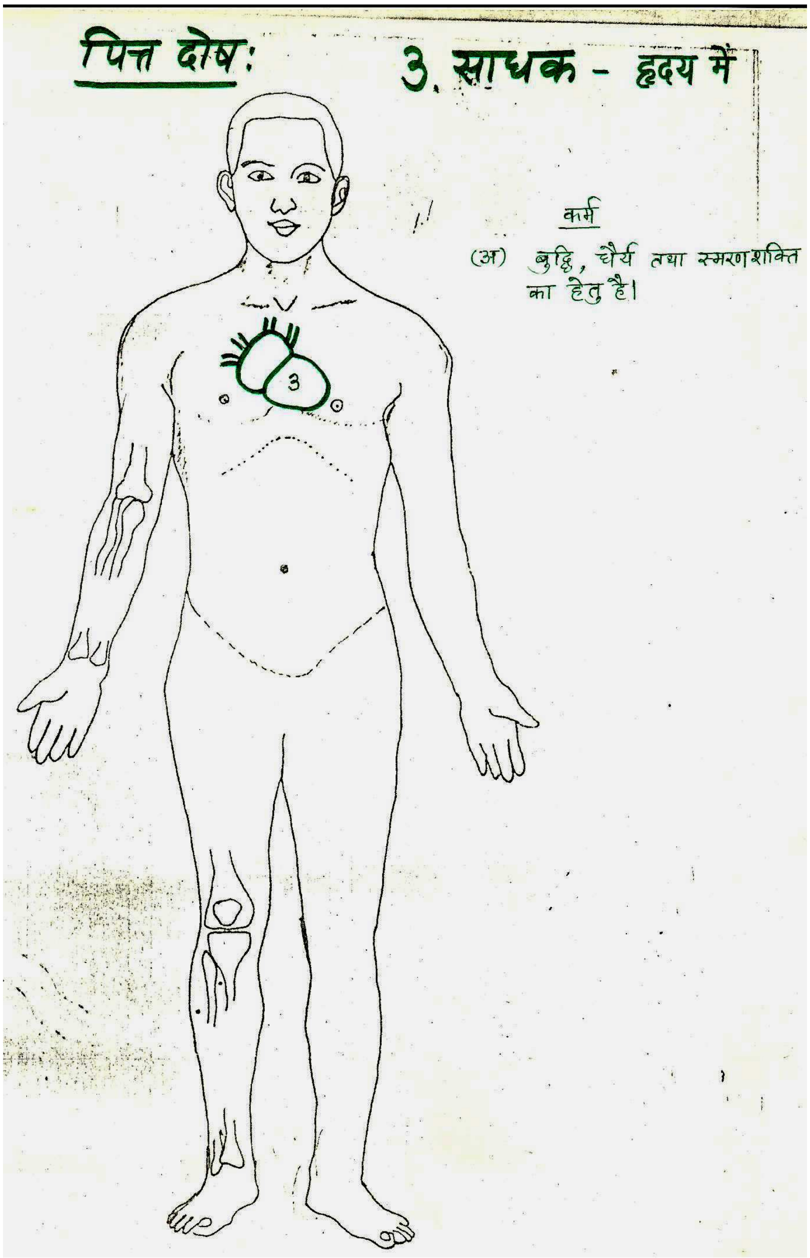

यह पित्त भेद हृदय तथा इससे सम्बन्धित नस और नाड़ियों मे स्तिथि होता है , ऐसी विचार धारा आयुर्वेद के मनीषियों की रही है / "साधक पित्त" का कार्य मन और मनुष्य की सभी तरह की मनो भावनाओ से जुड़ा हुआ होता है / साहस, वीरता, क्रोध, गुस्स, लड़ना, झगड़ना, मरने और मारने पर उतारू हो जाना, स्वभाव मे उग्रता, यानी आज की निदान ग्यान की भाषा मे सीझोफ्रेनिया, आब्स्ट्रक्टिव कम्पल्सिव डिसार्डर, मेनिया जैसे दिमागी रोग इत्यादि जैसे सौम्य और उग्र ्मान्सिक रोग , ऐसे या यस सब इसी साधक पित्त के दायरे मे आते है /बौध्धिक क्षमता, बुध्धि, याद करने की क्षमता, सोचना, गम्भीर चिन्तन , तीक्षण बुध्धि, मन्द बुध्धि, बुध्धिहीन होना, बुध्धिमान होना, तर्क , वितर्क करना यह सब इसी पित्त भेद के अधिकार क्षेत्र मे आता है /सभी तरह की मानसिक विकृतियो का कार्य क्षेत्र इसी पित् भेद के अन्तर्गत आता है /

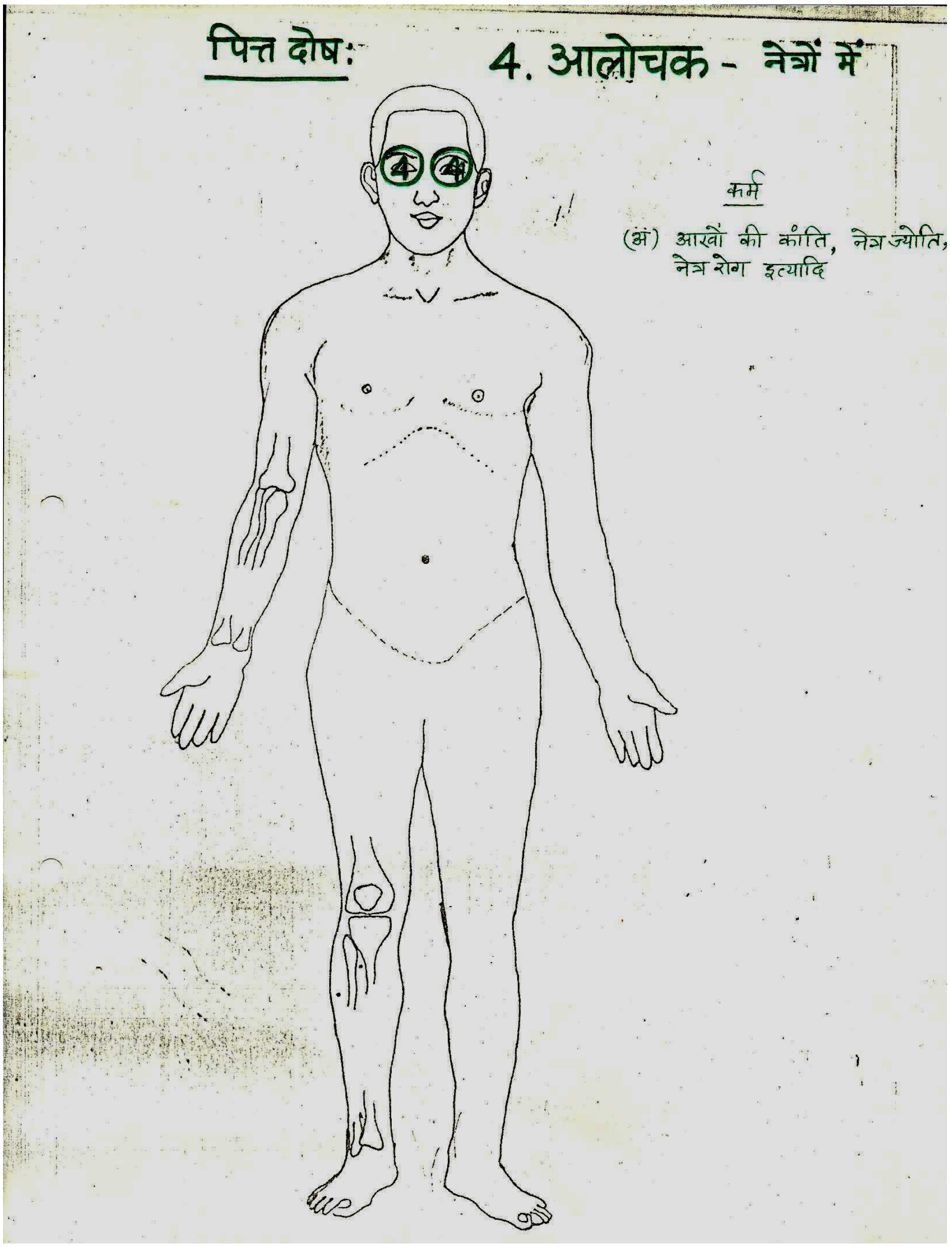

आलोचक पित्त भेद मनुष्य की आन्ख यानी नेत्र और नेत्र कोटर (आई साकेट) और नेत्र से जुड़ा हुआ मष्तिष्क का भाग तथा नेत्रो को रोगी बनाने मे जुड़े हुये अन्गो के कार्य पर अधिकार करता है / इसमे नेत्र के अलावा नेत्र को रन्गने बाले मेलानाइन और आन्ख के लेन्स तथा इससे जुड़ी हुयी नस और नाड़ियों का सम्मिलित शरीर के सिस्टम भी शामिल हो जाते है / दृष्टि दोष, देखना और अनुभव करना यह सब इसी पित्त भेद के अन्तर्गत आता है /

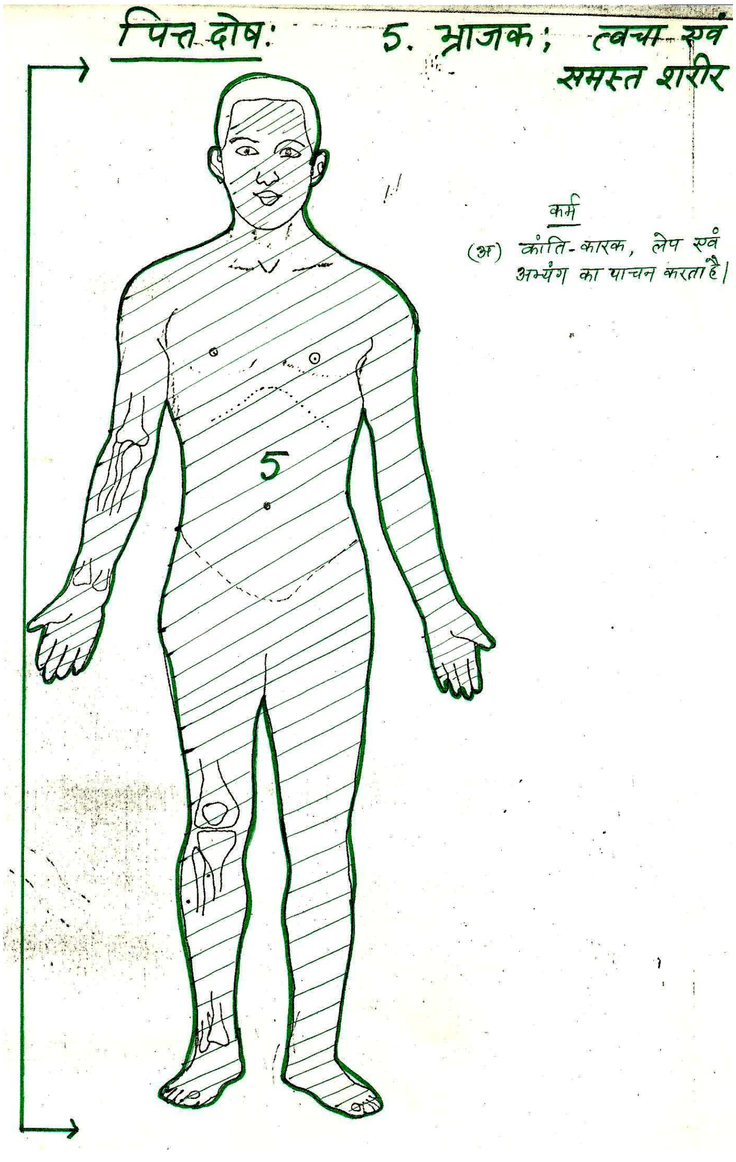

19

पित्त भेद का "भ्राजक पित्त" शरीर के विशाल क्षेत्र को कवर करता है / यह शरीर की त्वचा और चर्म और रोम कूप और इससे समबन्धित सभी कार्यो के अधिकार मे आता है / एलर्जी, खाज, खुजली, ज्वचा का रन्ग बदलना यानी काला या सफेद या लाल या पीला या नीला या हरा या गुलाबी अथवा किसी भी रन्ग का होना , सेन्सेशन , ठन्डा या गर्म का महसूस होना, दर्द होना आदि आदि सभी बातों को यही पित्त भेद नियन्त्रित करता है ऐसा आयुर्वेद के मनीषियो का मानना है /

वात दोष के पान्च भेद ; (अ) उदान (ब) प्राण (स) समान (द) व्यान (य) अपान

वात दोष के ये पान्च पान्च भेद किस स्थान मे रहते है, यह नीचे के चित्र मे दर्शाया गया है /

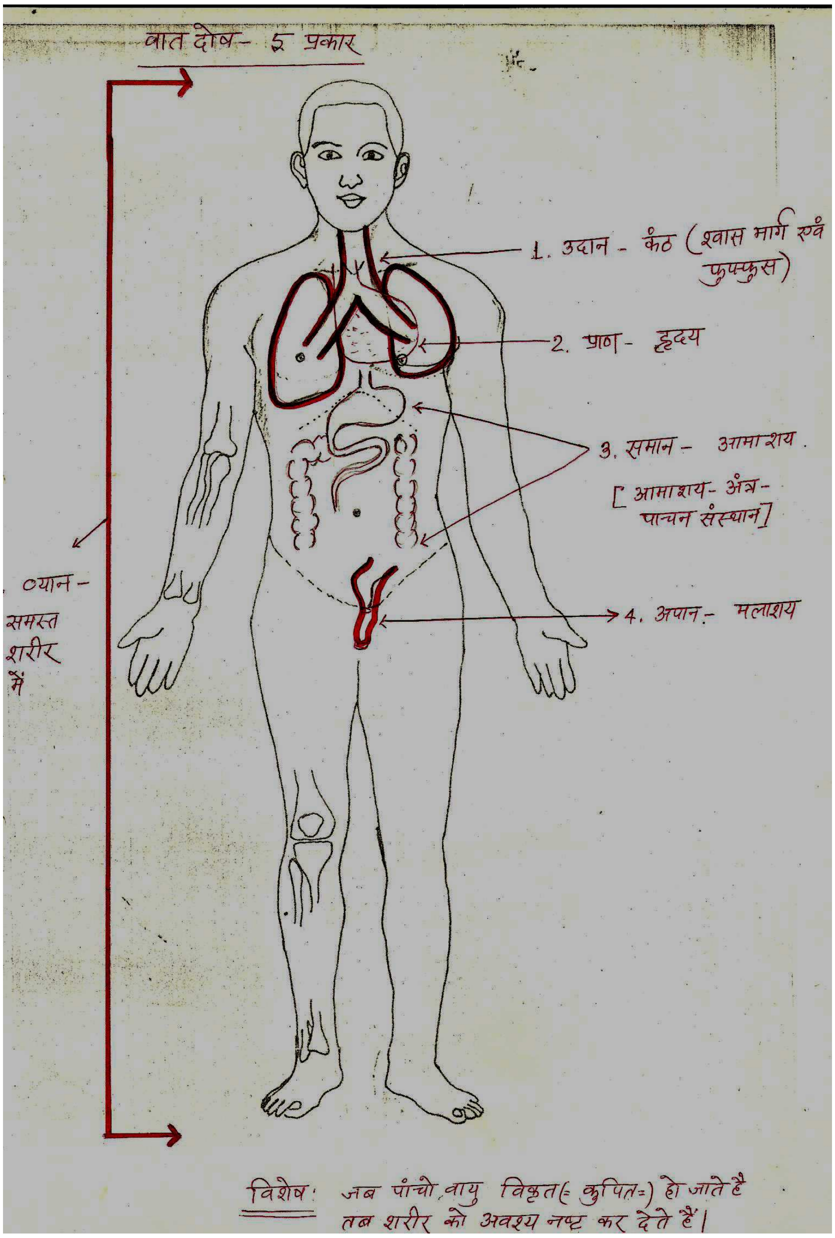

सभी दोषों में वात यानी वायु दोष प्रधान है यानी सबसे पहले और सबसे स्ट्रान्ग तत्व आयुर्वेद मे माना गया है / बिना वात के अन्य दोनो दोष पित्त और कफ तत्व अपने आप दूसरे स्थान पर नही जा सकते है या स्थापित हो सकते है / इसलिये कार्य करने के दृष्टि कों से वात सबसे ज्यादा प्रधान स्वरूप मे माना गया है / इसके पान्च भेद होते है / यह पान्चो भेद ऊपर के चित्र मे दर्शाये गये हैं /

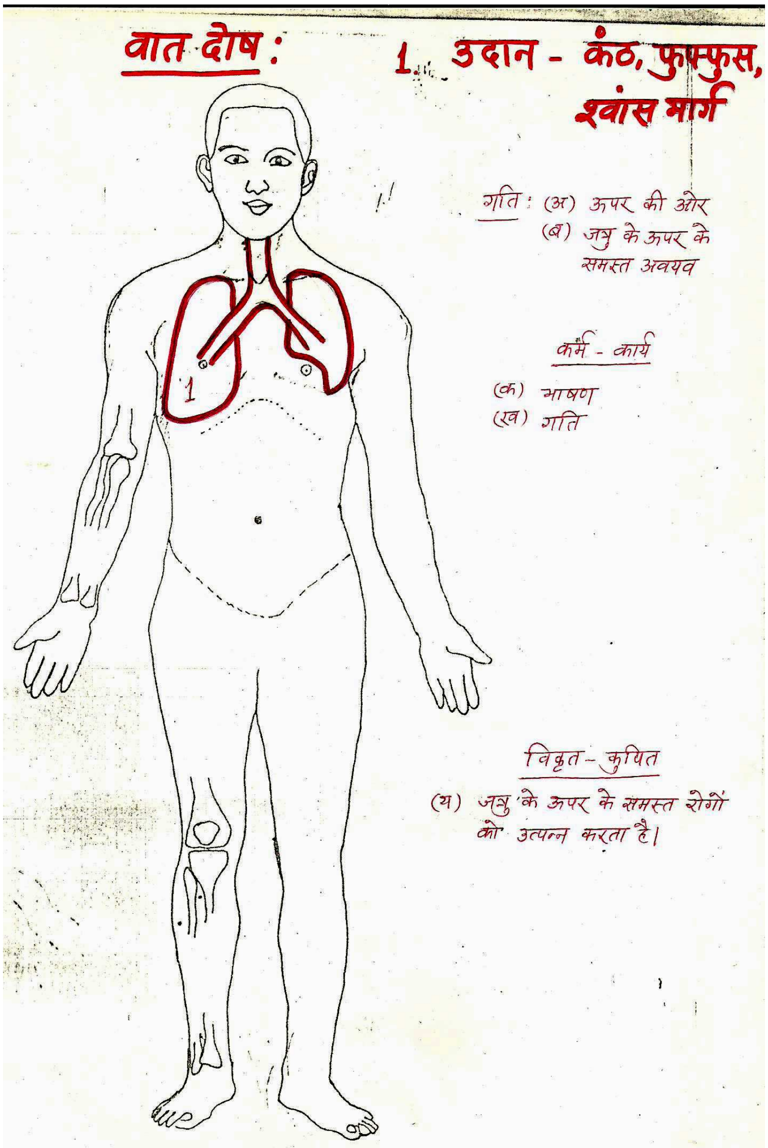

वात दोष के भेद "उदान वायु" का स्थान मूलत:: कन्ठ और फुफ्फुस और श्वास मार्ग से सम्बन्धित है / उर्ध्व जत्रु रोग यानी गले से ऊपर के जितने भी रोग होते है वह सब इसी वायु के अधिकार क्षेत्र मे आते हैं / त्रिक स्थान का यह एक भाग है और इसमे शरीर के ऊपर के दोनों हाथ और कन्धे और गला और गर्दन और सम्पूर्ण सिर के रोगो को यह वायु दोष डामिनेट करता है /

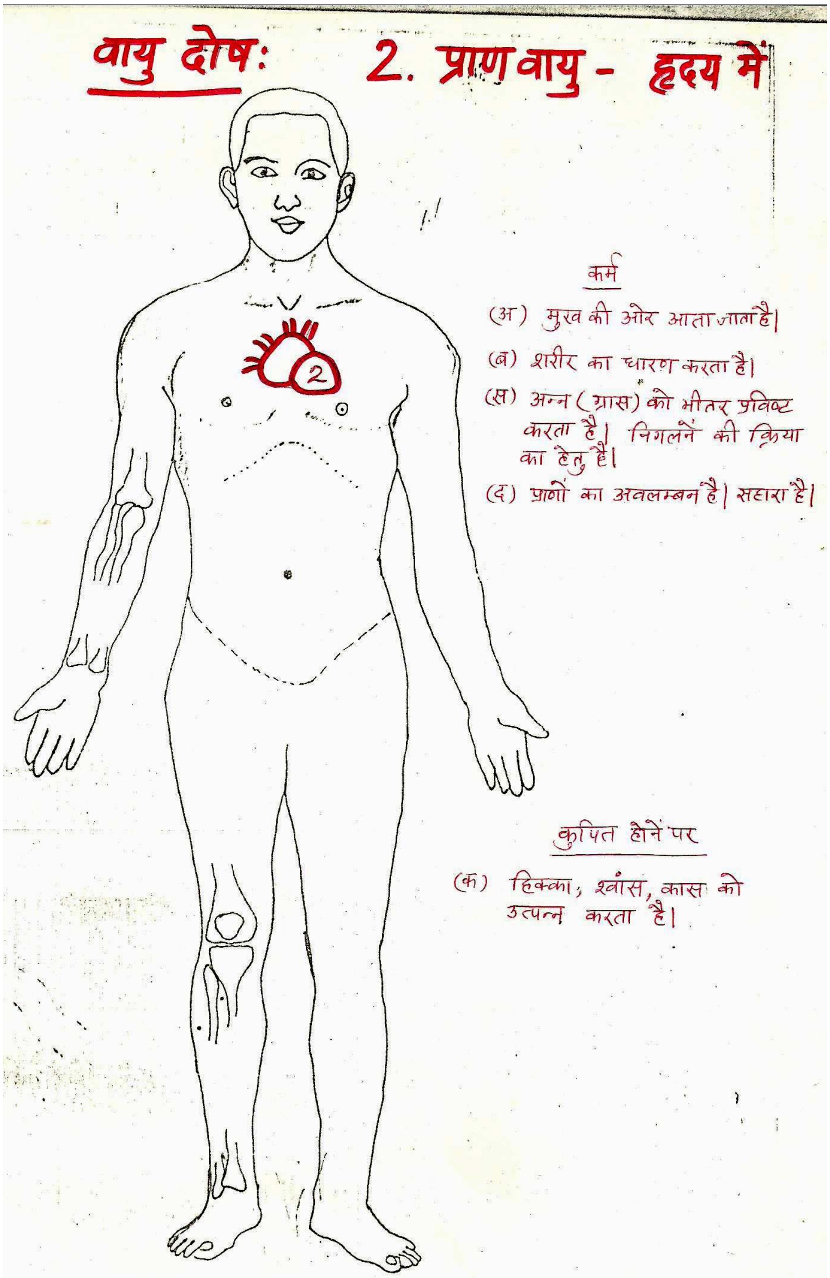

"प्राण वायु" जैसा कि इसका नाम है वैसा ही इसका काम है / यह शरीर को प्राण युक्त बनाये रखने का कार्य करती है / जीवन देना और जीवन लेना इसी वायु का कार्य है / मनुष्य बिना खये कुछ दिनो तक जीवित रह सकता है लेकिन बिना हवा के यह कुछ मिनतो मे ही जीवन त्याग देता है /

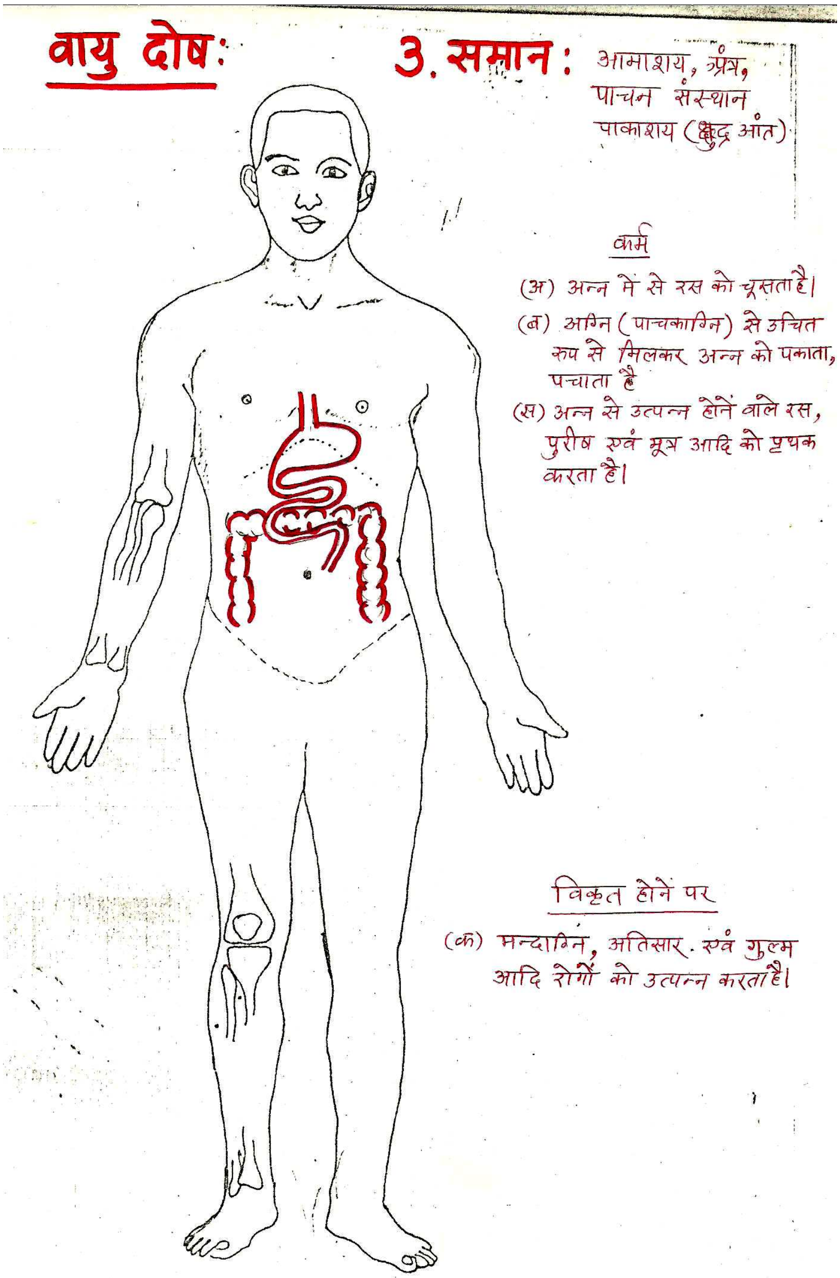

"समान वायु" का स्थान आयुर्वेद के मत के अनुसार जिस तरह से विभाजित किया गया है , उससे यह पता चलता है कि यह "अपर डायजेस्टिव सिस्टम" के भागों को अधिकृत स्वरूप मे शामिल करता है / जैसा कि ऊपर के चित्र मे दर्शाया गया है कि किन अन्गों को समान वायु सन्चालित करती है / आयुर्वेद के चिकित्सा दर्शन मे इन्ही सिध्धान्तों पर आधारित करके दवाओ का निर्माण और पथ्य प्रहएज की व्यवस्था की गई है इसलिये यह जाना बहुत जरूरी है कि आयुर्वेद के सिध्धान्त बीमारियो के बारे मे क्या कहते है / यही वह आधार है जिसके द्वारा चिकित्सा कार्य मे सफलता मिलती है / इसे अधिक स्ररल और ग्राह्य बनाने के लिये ावश्यकता इस बात की है कि यही सब सिध्धान्त आधुनिक विग्यान के हिसाब से को-रिलेट कर्त दिये जांय ताकि समझने मे आसानी हो जाये /

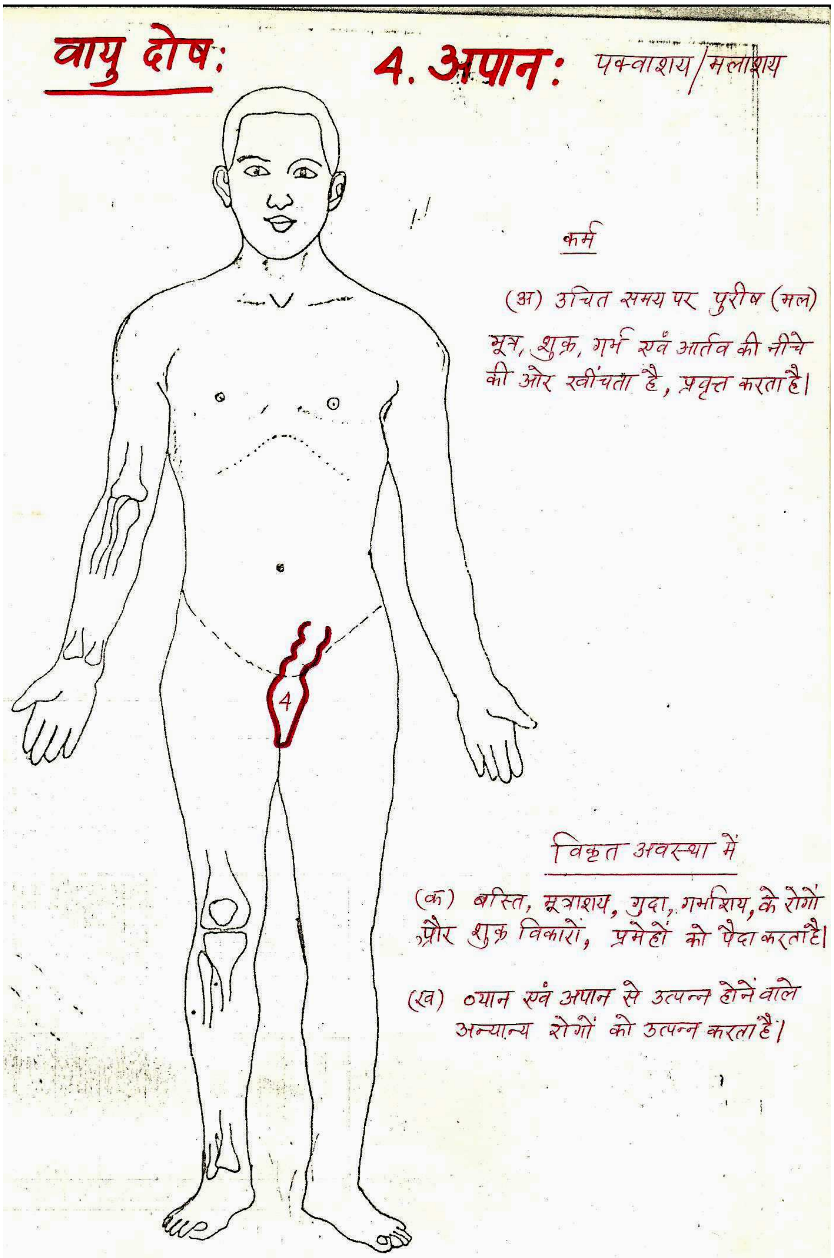

"अपान वायु " का स्थान लोवर एबडामेन मे स्थापित किया गया है , ऐसा आचार्यों का मनना है /

मेरा मानना है कि यह स्थान डिसेन्डिन्ग कोलन और सिग्मोयड कोलन और रेक्टम को लेकर बनाया गया है /

वायु के गुणों को देखते हुये इस्दे अति महत्व पूर्ण माना गया है / बहुत साधारण रूप मे इसको समझने के लिये कहा जा सकता है कि मुख द्वारा भोजन पाचन-तन्त्र के अन्दर प्रवेश कराया जाता है और इसी तन्त्र के अन्तिम छोर रेक्टम द्वारा यही खाना और पीना सब बाहर निकाला जाता है / भोजन का खाया जाना या पीना और पाचन करना यह सब समान वायु के + कार्य है लेकिन पचे हुये भोजन को आन्तो से बाहर निकालने का कार्य "अपान वायु" द्वारा पूरा किया जाता है /

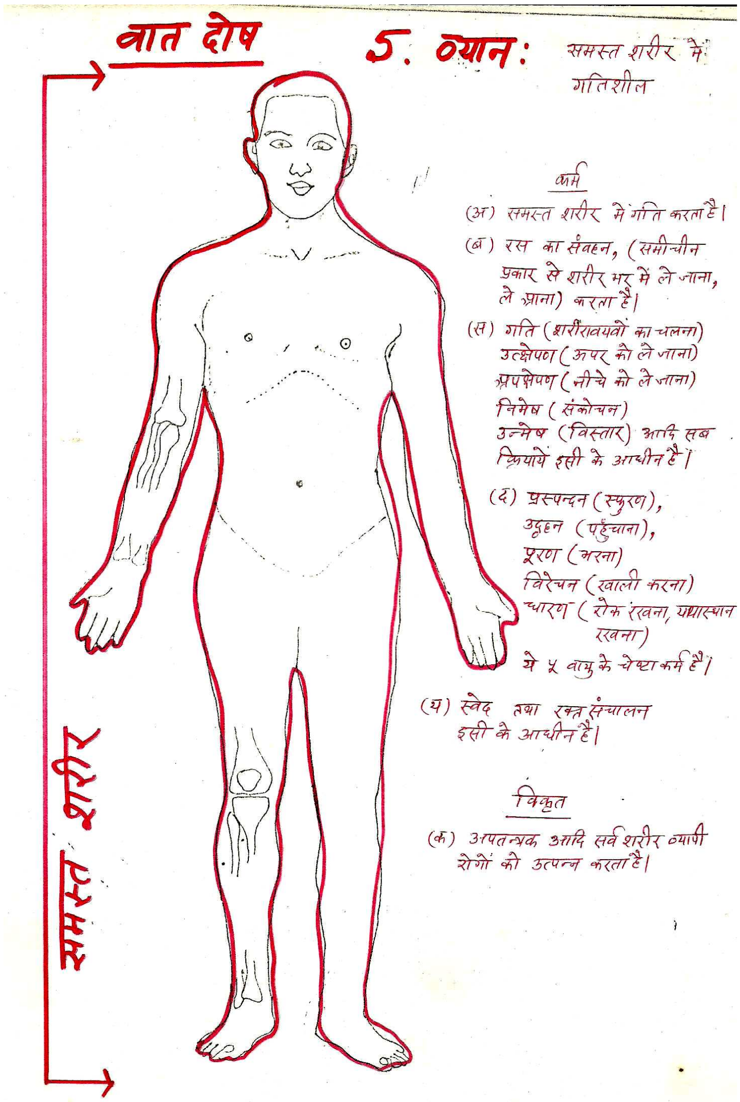

"व्यान वायु" का स्थान सम्पूर्ण शरीर मे होना बताया गया है / इसका मतलब यह हुआ कि शरीर के सम्पूर्ण कार्यो के लिये इस वायु का उपस्तिथि होना बहुत आवश्यक है / आयुर्वेद की चिकित्सा मे ऐसे बहुत से रोग है जिनका सीधा सम्बन्ध व्यान वायु के अधिकार क्षेत्र मे आता है , जैसे शरीर का पूरी तरह से अकड़ जाना , शरीर का पूरी तरह से जकड़ जाना, शरीर मे किसी भी प्रकार का कोई मूवमेन्ट न होना , सारे शरीर मे जलन , सारे शरीर की त्वचा के रोग यह सब व्यान वायु के अधिकार क्षेत्र मे आते है / व्यान वायु के शमन के लिये आयुर्वेद के शास्त्रों मे बहुत सी औषधियों को बताया गया है /

ऊपरोक्त सभी त्रिदोष और त्रिदोष-भेदों के बारे मे सन्क्षिप्त जानकारी होने के बाद यह बात सबको समझ मे आ गयी होगी कि आयुर्वेद के शास्त्रियों ने शरीर को कितने हिस्सों मे बान्टकर उनका आयुर्वेद के चिकित्सकीय दृष्टिकोण को ध्यान मे रखते हुये उपयोग किया है /

ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन की मैपिन्ग में इन्ही सब बातो को समाहित किया गया है ताकि उत्कृष्ट रूप मे इन सभी मौलिक सिध्धन्तों का सही सही आन्कलन किया जा सके

इलेक्ट्रिकल सिग्नल्स का विवेचन

ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैनर मशीन द्वारा रिकार्ड किये गये सिग्नल्स का अध्ध्य्यन करना एक महत्व पूर्ण कार्य है / यह महत्व पूर्ण इसलिये है क्योन्कि मशीन द्वारा रिकार्ड की गयी वेव्ज का अध्ध्य्यन रोग निदान और व्याधि निदान के अलावा आयुर्वेद के मौलिक सिध्धान्तों का निदान और आनकलन करना भी है / चून्कि आयुर्वेद चिकित्सा विग्यान के सिध्धान्त अन्य दूसरे चिकित्सा विग्यान से भिन्न है इसलिये रोगी की रोग-चिकित्सा करने मे यही सिध्धान्त मुख्य भूमिका चिकित्सा कार्य मे निभाते है /

इसलिये यह जरूरी है कि रोग निद्दन और व्याधि निदान के साथ साथ त्रिदोषो की स्तिथि और अन्य सैध्धान्तिक बाते स्पष्ट रू से सामने हों/ आयुर्वेदास्कैन रिपोर्ट द्वारा दिया गया डाटा निदानात्मक है / ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन मशीन से प्राप्त डाटा को हारीजोन्टल और वर्टिकल दोनो ही स्तिथियो मे नापते है / यह नाप / मीजरमेन्ट बाद मे कम्प्यूटर साफ्ट्वेयर मे भेज दी जाती है , जहा सम्बन्धित साफ्ट्वेयर इस सबकी अनालाइसिस करके रिपोर्ट के रूप मे प्रस्तुत करता है /

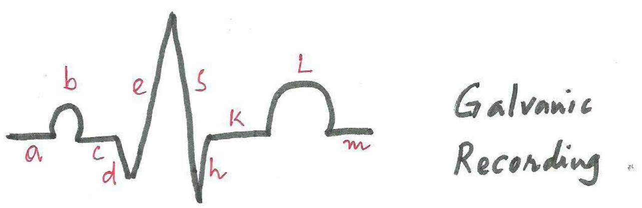

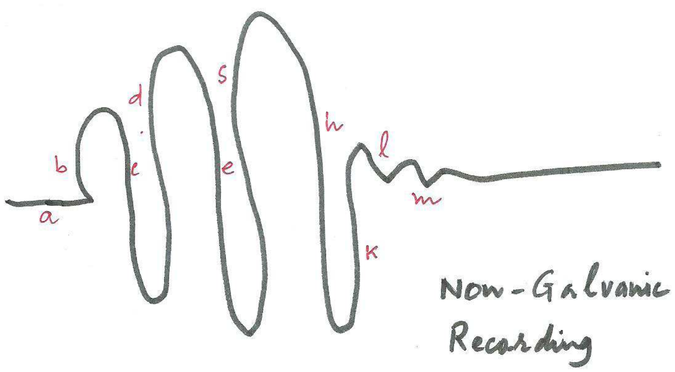

ऊपर के चित्र मे यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन मशीन द्वारा प्राप्त रिकार्डिन्ग किस तरह की होती है / हारीजेन्टल और वर्टिकल लाइन्स / वेव्ज की पहचान के लिये किस तरह के नाम दिये गये है / ई०टी०जी० मशीन अभी तक दो तरह की वेव्ज रिकार्डीन्ग के लिये विकसित की गयी है / एक- गैल्वनिक वेव्ज रिकार्डिन्ग और दूसरा- नान गैलवनिक रिकार्डिन्ग / दोनो ही वेव्ज रिगी के परीक्षण के लिये काम मे प्रयोग की जाती है /

रिकार्ड की गयी वेव्ज के बारे मे रिकार्डिन्ग के समय बहुत सी सावधानियों की आव्श्यकता होती है / रिकार्डिन्ग की स्तिथिया आयुर्वेद के त्रिदोष के अनुसार तह की जाती है / वात और पित्त और कफ की

स्तिथियां के अनुसार रिकारडिन्ग करने का नियम है / इसका कारण यह है कि जब तक मरीज अथवा रोगी के रोग का निदान आयुर्वेद के सिध्धान्तो के अनुसार नही होगा तब तक रोगी के लिये सटीक और बेहतर उपचार के लिये आयुर्वेदिक दवाओ और आयुर्वेद का पथ्य पालन करने के लिये और आयुर्वेद के अन्बुसार जीवन शैली को बताने के लिये अच्छी बैक ग्राउन्ड नही मिल पायेगी / इसलिये तीनो अवस्थाओ मे रोगी का परीक्षण करना आव्श्यक होता है ताकी इलाज करने मे सम्पूर्णता बनी रहे /

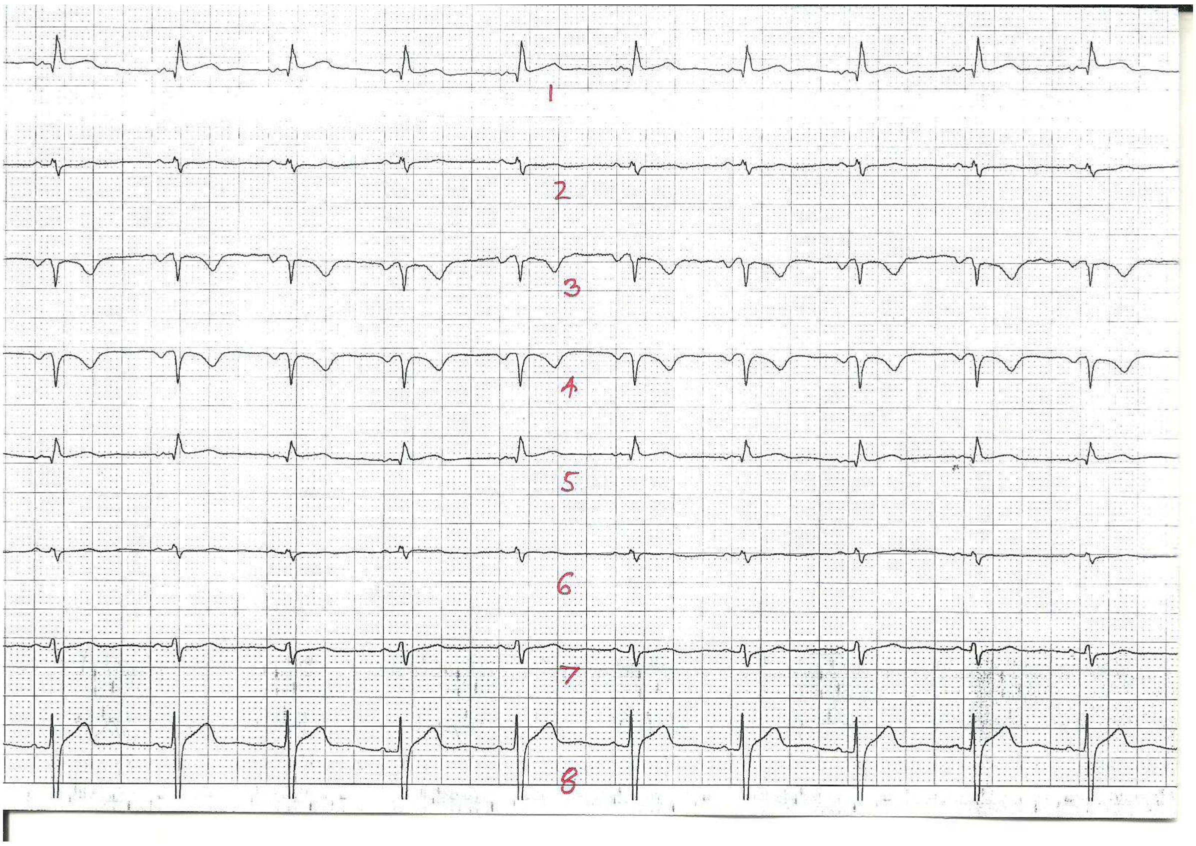

रोगी के परीक्षण और तकनीक के विकास के लिये गैलवनिक रिकार्डर का उपयोग अधिक करते है / अभी तक सभी परीक्षण इसी वेव्ज के अध्ध्य्यन के ऊपर आधारित हैं / नान गैलवनिक वेव्ज की रिकार्डिन्ग रोग निदान के सूक्षम और अति सूक्षम बिन्दुओं को एक्स्प्लोर करने के लिये अति उत्तम समझा जाता है / लेकिन गैलवनिक रिउकार्डिन्ग का अधिक उपयोग होने के कारण इसका विकास बहुत हो चुका है इसलिये अधिक विकसित होने के कारण इसी वेव्ज का अध्ध्य्यन अधिक करते है /प्रस्तुत चित्र मे रिकार्ड की गयी वेव्ज का उदाहरण दिया गया है और यह किस पैटर्न की होती है इसे बताया गया है / पाजिटिव और निगेटिव डिफ्लेक्शन के द्वारा रोग निदान और आयुर्वेद के दोष निदान किये जाते है /

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि आयुर्वेद के महर्षियों ने चिकित्सा व्यवस्था को सरल बनाने के लिये और रुग्ण स्थान की पहचान के लिये नियम और कन्डीशन फ्रेम की हैं ताकि रोग निदान और उसके प्रतिकार के लिये उपयुक्त और सटीक उपाय अथवा उपायों का निर्धारण किया जा सके / इन्ही सब आयुवेद मे बताये गये नियमो को ध्यान मे रखकर रोगी के रोग के अनुसार स्थानो का चयन अथवा मैपिन्ग

रिकार्डिन्ग की सुविधा के लिये की जाती है ताकि परिणाम बेहतर से बेहतर प्राप्त हो और गलतियों की सम्भावना न के बराबर हो /

ये रिकार्ड किये गये सिग्नल्स का अध्ध्य्यन रिकार्डिन्ग की स्टायल और रिकार्डिन्ग की गति और रिकार्डिन्ग के शेप्स तथा अन्य बातों पर आधारित होती है / रिकार्डिन्ग के पैटर्न देखकर ही पता चल जाता है कि मरीज को किस तरह की बीमारी है , अगर सतत अध्ध्यन किया जाता रहे तो रोग निदान मे बहुत आसानी हो जाती है / शरीर के स्थानो स्थानो की रिकार्डिन्ग से पता चल जाता है कि अन्ग सामान्य है अथवा असामान्य कार्य कर रहा है /

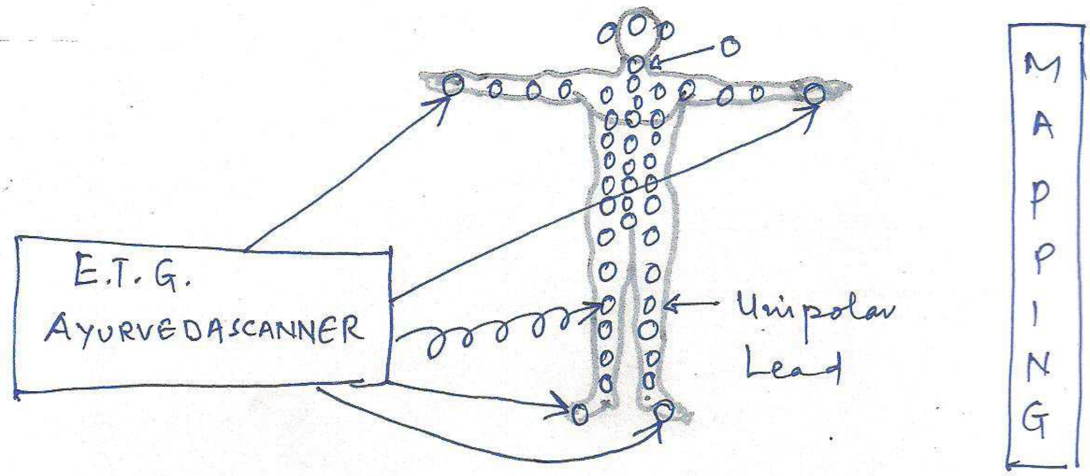

PLACEMENT OF ELECTRODES ACCORDING TO RECORDING OF SHOWN MAPPING IN HUMAN-BODY FRONT SIDE

ऊपर् के स्केच मे बताया गया है कि किस तरह से शरीर के हिस्सों को ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैनर से जोड़ते हैं / स्कैनर शरीर की मैपिन्ग रोग के अनुसार स्थान स्थान से रिकार्ड करता है / यह सब कुछ रोगी के रोग और चिकित्सक की क्षमता पर निर्भर करता है कि किस स्थान की रिकार्डिन्ग चाहिये और उस रिकार्डिन्ग के क्या परिणाम मिले हैं / चित्र मे केवल शरीर के सामने के हिस्से का ही व्यू दर्शाया गया है / साइड और पीठ के हिस्से की मैपिन्ग थोडे बदलाव के साथ करते हैं /

नीचे दी गयी स्कीमेटिक प्रेजेन्टेशन मे ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैनर की कार्य करने की क्षमता का सिल्सिलेवार स्टेप बाई स्टेप क्या क्या होता है , यह बताने का प्रयास किया गया है /

SCHEMATIC PRESENTATION OF ELECTRO-TRIDOSHA-GRAM/GRAPH TECHNOLOGY

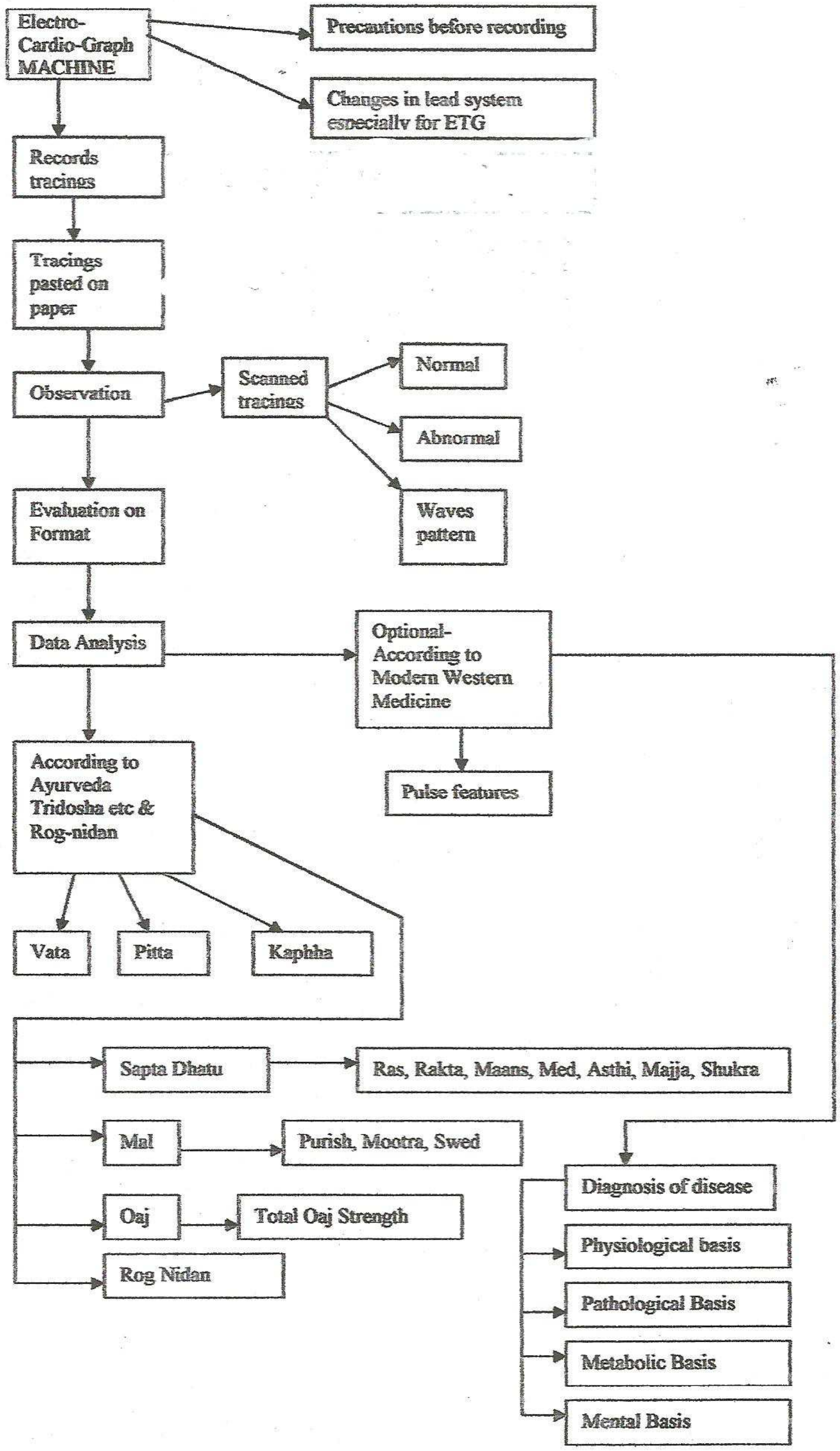

स्कीमेटिक प्रेजेन्टेशन के द्वारा फ्लो चार्ट में इस बात को बताने का प्रयास किया गया है कि किस तरह से ी०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन काम करता है और इससे क्या क्या हासिल होता है /

ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन परीक्षण से जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि

१- आयुर्वेद के मौलिक सिध्धान्तों का रोगी के शरीर मे उपस्तिथि
२- सभी सिध्धान्तो का इन्टेन्सिटी लेवल
३- सभी सिध्धन्तो का उपस्तिथि स्तर
४- रोगी के शरीर के सभी सन्सथानो का आरोग्य स्तर
५- रोगी के शरीर के न्दर हो रहे बदलाव का सन्केत
६- रोगी के शरीर मे होने वाली कमिया और कमियो का स्तर

आदि आदि बातो का निर्णायक पता चल्ता है / यही वह चिकित्सा का आधार बनता है जिसके निष्कर्ष स्वरूप ्रोगी की बीमारी के इलाज के लिये सटीक चिकित्सा व्यवस्था का इन्तजाम किया जा सकता है /

कम्प्यूटर द्वारा प्राप्त रिपोर्ट का स्पेसीमेन ;

Computer printed Report
Specimen of E.T.G. AyurvedaScan

रोगी का परीक्षण पूरी तरह से कम्पलीट हो जाने के बाद सभी तरह का रिकार्ड किया गया डाटा ई०टी०जी० मशीन के द्वारा कम्प्यूटर मे भेज दिया जाता है / रिपोर्ट बनाने के लिये कम्प्यूट्र मे तरह तरह के आवश्यकतानुसार स्पेशल किस्म के साफ्ट्वेयर डाले गये है और खास तरह के साफ्ट्वेयर जोहमारे रिसर्च सेन्टर द्वारा तैयार कराये गये है , उनके द्वारा रिपोर्ट तैयर की जाती है /

नीचे रेस्ट पोजीशन की स्तिथि का रिकार्ड किया गया रिपोर्ट के पहले पेज की स्पेसीमेन कापी प्रस्तुत है / इस रिपोट मे पहले १० सर्वोच्च सिम्पटम यानी ए से लगाकर जे तक पहले १० रोग के सिम्पटम, जो कई हजार लक्षण की शार्टिन्ग के बाद सबसे ऊपर के १० लक्षण चुने गये है, उनका चुनाव करके प्रस्तुत किये गये है /

इसके नीचे क्यू से लेकर ज़ेड तक के लक्षण दिये गये है / ये वह लक्षण है जो सबसे नीचे के यानी अन्तिम १० लक्षण है / यह सभी अन्तिम दस लक्षण दिये गये है /

ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन रिपोर्ट का यह पहला हिस्सा है / इसमे नीचे दिये गये कुछ पेज रिपोर्ट की अहमियत को बताते है और रोग निदान मे निर्णायक भूमिका निभाते है /

पहले पेज की रिपोर्ट से उन सभी लक्षनो का पता चल जाता है जो व्यक्ति को बीमार बनाते है / इन सभी लक्षणो के सिन्ड्रोम्स को मिलाकर रोगी की बीमारी की एक पिक्चर बन जाती है कि रोगी के कौन कौन से अन्ग और सिस्टम बीमार है और उनका आपस मे क्या इन्टेर रिलेशन है /

ऊपर के दस सिम्पटम यह बताते है कि रोगी के शरीर के कौन कौन से हिस्से एक्साइटेड स्टेज मे है और इनमे सबसे अधिक कौन है और इन अधिक मे भी एक्साइटेड लेवल किसका कम है / इसी तरह सबसे कम नीचे अन्तिम कौन है और उससे ऊपर के कौन कौन से सिस्टम या अन्ग सामान्य से कम काम कर रहे है /

Kanak Polytherapy Clinic And Research Center

Resting Position
ETG AyurvedaScan
Final Report

पुरुष

Name: Hanu Raikwar, 05 Yrs., Male FUP2ND
Address: Rajendra Nagar, Orai, U.P.
Mobile: 7275194697
DATE: 2-Jun-17
Reffered by ; Dr. D.B.Bajpai

Chief Complaints & Impressions : मरीज की मुख्य तकलीफें

Below Mentioned Disease conditions after ETG AyurvedaScan studies and Conclusion Presented HOMEOSTATICALLY

Kindly co-rrelate the following syndromes with the Patient Complaints

A- Cervical Spinal neuro-musculo-skeletal anomalies present
B- Electrolytic / Minerals imbalances observed
C- Body Fat / Lipids / Cholesterol abnormal observed
D- Parietal Brain faculties pathophysiology observed
E- Vitality level not upto the mark observed
F- Hydromusculosis / Muscular Stiffness / Swelling observed
G- Blood Infection / Blood disorders / Skin / Pigmentation anomalies present
H- Calcium / Nutrients / Minerals pathphysiology observed
I- Coccygeal spine neuro-musculo-skeletal anomalies present
J- Complete Bowels / Intestinal pathophysiology observed
Q- Pelvis / back / Lumber region Inflammatory condition present
R- Kidney/Urinary Bladder / Genital organs / Urethra anomalies present
S- Right Lower extremeties regions Pathophysiology Observed
T- Right Upper extremeties regions Pathophysiology observed
U- Frontal Brain faculties pathophysiology observed
V- Sinusitis / Nasal cavity / Nasal passage pathophysiology present
W- Body Bony Joints / small-bigger pathophysiology present
X- Thymus Glands with allied syndromes pathophysiology present
Y- Serum Calcium / allied Micro-minerals abnormal observed
Z- Heamoglobin / Defficiency / Blood anomalies / pathology observed

ETG AyurvedaScanner | Ayush Heamometer | Diagnostics Equipments | Ayurveda Urino-meter

Dr. D.B. Bajpai
Ayurvedic Diagnostician & Chief E.T.G.A. Investigator

[14] This report is not for the reference of MEDICO-LEGAL objects.

a

67/70, Bhoosatoli Road, Bartan Bazar, Kanpur-1

रेस्ट पोजीशन की रिपोर्ट का पहला पेज; इस रिपोर्ट मे बताया गया है कि रोगी को किस तरह के सिन्ड्रोम्स और सिस्टम की कार्य-विकृति और विकृति कैसी है /

Kanak Polytherapy Clinic And Research Center

मस्तिष्क/आटोनामिक नर्वस सिस्टम दबाव
[Normal; 81 से 90 e. v. in Adult] 96.30 e.v.

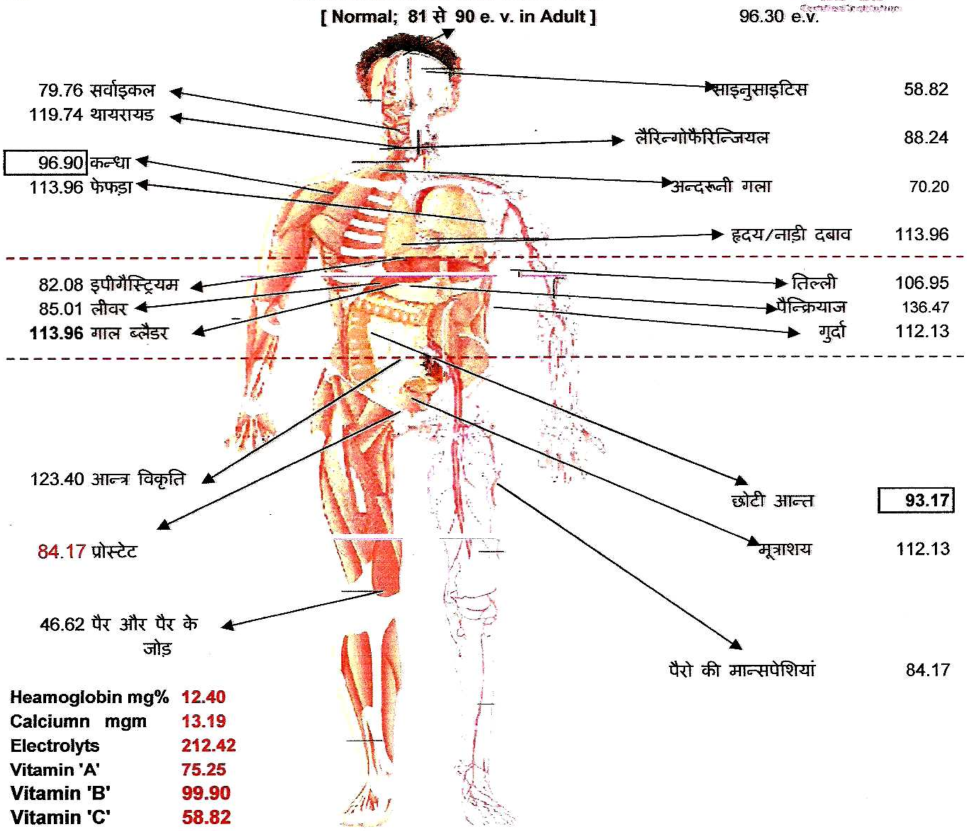

Heamoglobin mg%	12.40
Calciumn mgm	13.19
Electrolyts	212.42
Vitamin 'A'	75.25
Vitamin 'B'	99.90
Vitamin 'C'	58.82
Vitamin 'D'	103.62

[SEED Method evaluation]

ORGAN'S PATHOPHYSIOLOGY / PATHOLOGY ; शरीर के अन्गों की कार्य विकृति और विकृति

NORMAL VALUE; 91 to 105 e *P.N.A." Parameters Not Applicable इन्गित पैरामीटर लागू नहीं हैं
Lower inclination Mild ; 90 to 70 e.v. Moderate ; 69 to 30 e.v. Severe ; 29 e.v. to below
Higher inclination Mild ;106 to 140 e.v. Moderate ;141 to 260 e.v. Severe ;260 e.v.to higher

Value within BOX are NORMAL

मानव शरीर के सभी अन्गों और प्रत्यन्गों का आयुर्वेद मतानुसार Electrical Mapping और Scanning करने के उपरान्त ऊपर दर्शाये गये निम्नाधिक स्तर Intensity Levels से Vital Organs की कार्य-विकृति Pathophysiology और विकृति Pathology के उपस्तिथि स्तर का ग्यान होता है/Intensity Level अध्ध्यन से अन्गों के कार्य करने की क्षमता का पता लगता है,जिससे आयुर्वेद के दृष्टिकोण से रोग निदान और प्रभावित अन्गों की कार्य क्षमता को आयुर्वेद मौलिक सिध्धान्तों के साथ चिकित्सा कार्य के लिये Correlate करते हैं /

b

Hanu Raikwar, 05 Yrs., Male FUP2ND 2-Jun-17
[16]
888

67/70, Bhoosatoli Road, Bartan Bazar, Kanpur-1

रेस्ट पोजीशन की रिपोर्ट का दूसरा पेज ; ऊपर की रिपोर्ट मे बताया गया है कि शरीर के अन्गो की क्या स्तिथि है / ये अन्ग सामान्य कार्य कर रहे है अथवा असामान्य कार्य कर रहे है / विभाजन रेखा से पता चल जाता है कि आयुर्वेद के त्रिदोषों के अनुसार विकृति किस स्तर की है /

Kanak Polytherapy Clinic And Research Center

NAME ; Hanu Raikwar, 05 Yrs., Male FUP2ND **2-Jun-17**

रिपोर्ट : Report

शरीर में व्याप्त अंगों की कार्य विकृति / अंग विकृति तथा रोगों का आन्कलन

Study of the E.T.G. trace record is suggestive of the following Pathophysiological / Pathological complaints;

ई०टी०जी० ट्रेस रिकार्ड के अध्ययन पश्चात निम्न शारीरिक अंगों की कार्य विकृति / अंग विकृति विकार प्राप्त हुये हैं

Anomalies Present शरीर के अन्गों और सिस्टम की कार्य विकृति और विकृति उपस्तिथि

NORMAL VALUE; 91 to 105 e.v. ***P.N.A." Parameters Not Applicable इन्गित पैरामीटर लागू नहीं हैं**

Lower inclination ; Mild ; 90 to 70 e.v. Moderate ; 69 to 30 e.v. Severe ; 29 e.v. to below

Higher inclination ; Mild ;106 to 140 e.v. Moderate ;141 to 260 e.v. Severe ;260 e.v.to higher

Value within BOX are NORMAL

*** General Observation: सामान्य अध्ययन**

NERVOUS SYSTEM's ANOMALIES : नर्वस सिस्टम से सम्बन्धित कार्य क्षमता

* Auto Nervous system/Brain*मस्तिष्क/ए०एन०एस०दाब [Adult]	**96.30** e.v.
Cerebral Medula Brain सेरेब्रल मेडुला ब्रेन	96.90 e.v.
Temporal Brain टेम्पोरल ब्रेन	69.25 e.v.
Frontal Brain फ्रन्टल ब्रेन	58.82 e.v.
Parietal Brain पेराइटल ब्रेन	170.48 e.v.
Occipital Brain आक्सीपिटल ब्रेन	108.11 e.v.
Sleep निद्रा	100.71 e.v.
Mental/emotional/intellect मानसिक/भावना/बुद्दि	96.90 e.v.
Memory याददास्त ; याद रखने की क्षमता	69.25 e.v.

MUSCULOSKELETAL SYSTEM : मांसपेशियों और हड्डियों से सम्बन्धित विकार

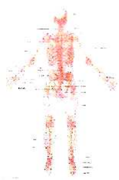

Upper limbs/joints muscles : बांह/ कंधा	97.89 e.v.
Cervical spondyle सर्वाइकल स्पान्डाइल	82.35 e.v.
Joints हड्डियों के जोड़	46.62 e.v.
Lower limbs पैर	84.17 e.v.
Cervical spine & region सर्वाइकल स्पाइन/क्षेत्र	214.51 e.v.
Thoracic spine & region थोरेसिक स्पाइन/क्षेत्र	105.11 e.v.
Lumber spine & region लम्बर स्पाइन/क्षेत्र	96.66 e.v.
Sacral spine & region सैक्रल स्पाइन/क्षेत्र	90.02 e.v.
Coccygial spine & region काक्सिजियल स्पाइन/क्षेत्र	123.40 e.v.
Pelvis /Back / Spine Bone / Spinal Cord रीढ़ की हड्डी	67.04 e.v.
Neuro-musculo-skeletal articulation न्यूरो-मान्शपेशी-हड्डी विकृति	132.00 e.v.
Hip Joints / Femur Head Bi-lateral sides	81.40 e.v.

941
[17]

ऊपर दी गयी रिपोर्ट से शरीर के सिस्टम का डाटा सिस्टम के अन्गो के हिसाब से दिया गया है / शरीर के जितने भी सिस्टम है उन सबके बारे मे जितना अवेलेबल डाटा है , वह सब दिया जाता है /

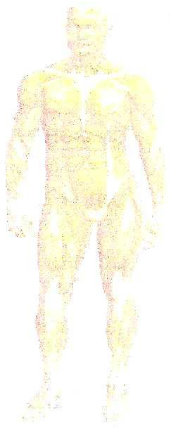

Human Body

Resting Position

Systemwise Evaluation Report

Browse details inside

▲	Respiratory System श्वसन सन्सथान	119.74 e.v.
▲	Skin & Integumentary System त्वचा और तत्सम्बन्धित अन्ग	114.45 e.v.
▲	Gastro-intestinal Tract system गैस्ट्रो इन्टेस्टाइनल ट्रैक्ट सन्सथान	123.40 e.v.
▲	Excretory System ; Renal System मूत्र सन्सथान	91.50 e.v.
▲	Lymphatic System लसिका / लिम्फैटिक सन्सथान	72.76 e.v.
▲	Endocrine System ; इन्डोक्राइन सिस्टम	90.78 e.v.
▲	Eyes / Nose / Throat / Ear systems ; आन्ख. नाक. कान. गला	81.46 e.v.
▲	Nervous System ; नरवस सिस्टम	96.30 e.v.
▲	Musculo-skeletal system ; अस्थि-मान्सपेशी सन्सथान	84.17 e.v.
▲	Circulatory system ; सर्कुलेटरी सिस्टम	123.40 e.v.
▲	Male Reproductory system ; पुरुष प्रजनन सन्सथान	111.73 e.v.
▲	Psychological Status	69.25 e.v.
▲	Electrolytes - minerals	212.42 e.v.
▲	Metabolism	82.08 e.v.
▲	Heamoglobin [by e.t.g.a.s Scanning method]	11.78 mg/dl
▲	Calcium ; Serum calcium [by e.t.g.a.s Scanning method]	13.19 mg/dl

Warning;
The parameters are given in this report are scanned electrically and is a part of ETG AyurvedaScan findings. Clinical correlation is necessary before confirmation of diagnosis and further treatment and should be established by other sources, pathological examination, Scans etc.

Hanu Raikwar, 05 Yrs., Male FUP2ND 2-Jun-17

67/70, Bhusatoli Road, Bartan Bazar, Kanpur, U.P.

शरीर के सभी सिस्टम्स और उनके अन्गो और प्रत्यन्गो की कार्य क्षमता के बारे मे ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन मशीन द्वारा अनालाइज किये गये डाटा और उससे प्राप्त डाटा-रिपोर्ट का उदाहरण स्पेसीमेन ऊपर दिया गया है / इससे पता चलता है कि शरीर के सिस्टम्स मे आपस मे कितना ताल मेल है और कमिया कहां कहां पर मौजूद हैं / आयुर्वेद मे चून्कि सारे शरीर का परीक्षण करते है इसलिये चिकित्सा करने मे जहां जहां भी विकृति मिलती है उसका उसी अनुरूप से इलाज भी करते हैं / इस तरह से प्राप्त डाटा आयुर्वेद की चिकित्सा मे रोग निदान के लिये सहायता पहुचाते है /

Kanak Polytherapy Clinic and Research Center

HUMAN BODY SYSTEMWISE REPORT

5

Gastro-Intestinal systemगैस्ट्रो-इन्टेस्टाइनल सिस्टम

पाचक पित Pachak Pitta [Ayurved]
पित्ताशय, क्लोम ग्रन्थि Gall Bladder, Pancrease
93.29

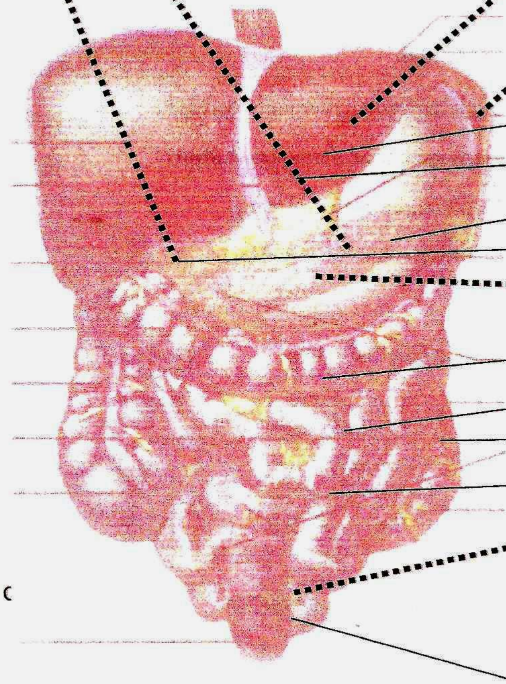

रन्जक पित Ranjak Pitta [Ayurved]
लीवर,तिल्ली Liver , Spleen
132.00

क्लेदन कफ Kledan Kapha [Ayurved]
Stomach, Oesophagus
89.66

Metabolism ; चयापचय
84.17

Appetite : भूख/पाचकाग्नि
93.17

Liver anomalies यकृत कार्य
85.01

Epigastric p'phy इपीगैस्ट्रिकपैथोफीजियोला:
100.00

pancreas/spleenअग्नाशय/तिल्ली
113.96

Gall bladder पित्ताशय कार्य
82.35

Saman Vayu समान वायु [आयुर्वेद]
पेट,बड़ी छोटी आन्त,जेजुनम,ड्डेनम
44.28

Colon Transverse ऊपर बड़ी आन्
123.40

Small Intestine ; छोटी आंत
113.96

Colon Decending बायीं बड़ी आन्त
112.43

Around naval-small intestines:नाभी
123.40

Apan Vayu अपान वायु [आयुर्वेद]
26.07

Intestinal pathophysioआन्त्र विकृति
123.40

Abdomen/ Colon पेट/आन्त/कोलन
82.35

ICB/IBSई०सी०बी०/ई०बा०सि०
82.35

Stool Evacuation आन्त सफ़ाई
100.00

Assimilation : आत्मसात
82.35

Gastro-Intestinal System Pathophysiology & Pathology ; पाचन संस्थान कार्य-विकृति और विकृति
123.40

General Impression; सामान्य अध्ययन पश्चात रोग-निदान ;
गैस्ट्रो इन्टेस्टाइनल अथवा पाचन सन्स्थान से सम्बन्धित रोगों से सभी परिचित हैं/ कोलायटिस,आंव आना,irritable bowel sysndromes, inflammatory condition of bowels, irregular bowel movements, indigestion, acidity, flatulence, diarrhoea,mucous stool assimilative disorders, metabolic disorders , liver, pancrease,spleen,Gall Bladder, Stomach, ailementary canal, oesophagus, jejunam, dudenum आदि आदि अन्गों की विकृतियां पैदा होती हैं /

Hanu Raikwar, 05 Yrs., Male FUP2ND 2-Jun-17
5 295

HB?

ISO

67/70, Bhusatoli Road, Bartan Bazar, Kanpur, U.P.

ऊपर दी गयी रिपोर्ट पाचन सन्स्थान से जुडे हुये और प्राप्त किये गये डाटा पर आधारित है / इस रिपोर्ट मे आयुर्वेद के दोषो के पान्च भेदों का पाचन सन्स्थान से कहां कहा जुड़ाव है और इनका क्या स्तर है , यह आवश्यकता के अनुसार उन सन्स्थानो मे जोड़ दिया गया है / प्रस्तुत रिपोर्ट मे समान वायु और अपान वायु और अन्य दूसरे दोष भेदों का उल्लेख किया गया है / इससे चिकित्सा कार्य और रोग निदान मे सहायता मिलती है /

Kanak Polytherapy Clinic And Research Center

आयुर्वेदिक मौलिक सिद्धांत उपस्थिति

प्रकृति PRAKRUTI - Temperament - Humour

वात	(सत्वSat)	212.74	N;90 से 100 e.v.
पित्त	(रज Raj)	99.14	N;90 से 100 e.v.
कफ	(तमTam)	106.81	N;90 से 100 e.v.

त्रिदोष Ayurvedic Etiology

त्रिदोष TRIDOSHA

वात VATA	70.19	N;40 से 70 e.v.
पित्त PITTA	94.31	N;60 से 90 e.v.
कफ KAPHA	52.16	N;80 से 110 e.v.

1-Aa

Hanu Raikwar, 05 Yrs., Male FUP2ND 2-Jun-17

95 5298

67/70, Bhoosatoli Road, Bartan Bazar, Kanpur-1

आयुर्वेद के लिये चिकित्सा कार्य मे आयुर्वेद के मौलिक सिध्धन्तो का जानना परम आवाश्यक है / मौलिक सिध्धान्त आयुर्वेद की जान और प्राण और श्वांस है / बिना इनके समझे और ग्यान किये हुये आयुर्वेद की चिकित्सा मे सफलता भले ही आन्शिक मिल जाये लेकिन पूर्ण रूप से नही मिल सकती है / ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन तकनीक से अब यह पता किया जा स्कता है कि रोगी के शरीर की प्रकृति क्या है ? रोगी के शरीर मे प्राप्त डाटा किस रेशियो में मौजूद हैं ? इसके अलावा वर्तमान मे कौन कौन से धोषो का क्या रेशियो है ? यह सब पता चल जाता है / इन सभी दोषो का ग्यान हो जाने पर चिकित्सा कार्य मे सटीक्ता आ जाती है और आरोग्य प्राप्त करने की दिशा मे किसी तरह का व्यवधान नही पैदा होता है /

Kanak Polytherapy Clinic And Research Center

आयुर्वैदिक मौलिक सिद्धांत उपस्तिथि

त्रिदोष भेद Ayurvedic Pathophysiology

वात भेद VATA BHED

प्राण	116.50	N;95 से 100 e.v.
अपान	26.07	N;95 से 100 e.v.
समान	44.28	N;95 से 100 e.v.
व्यान	22.65	N;95 से 100 e.v.
उदान	122.84	N;95 से 100 e.v.

पित्त भेद PITTA BHED

साधक	107.00	N;95 से 100 e.v.
पाचक	93.29	N;95 से 100 e.v.
रन्जक	132.00	N;95 से 100 e.v.
भ्राजक	23.14	N;95 से 100 e.v.
लोचक	38.71	N;95 से 100 e.v.

कफ भेद KAPPH BHED

क्लेदन	89.66	N;95 से 100 e.v.
स्नेहन	92.76	N;95 से 100 e.v.
स्लेष्मन	94.19	N;95 से 100 e.v.
रसन	89.55	N;95 से 100 e.v.
अवलंबन	90.91	N;95 से 100 e.v.

Hanu Raikwar, 05 Yrs., Male FUP2ND 2-Jun-17

96 5347

1-B

67/70, Bhoosatoli Road, Bartan Bazar, Kanpur-1

त्रिदोषों के भेद १५ होते है / ऊपर बतायी गयी रिपोर्ट मे इन सभी १५ भेदों के बारे मे अन्कित किया गया है / इशारा इस बात का किया गया है कि ये सभी भेद शरीर मे कितनी मात्रा मे मौजूद है और इनकी स्तिथि क्या है / जिससे यह पता चले कि शरीर के कौन कौन से अन्ग बीमार है और उनकी चिकित्सा किस तरह से की जा सकती है /

Kanak Polytherapy Clinic And Research Center

आयुर्वेदिक मौलिक सिद्धांत उपस्तिथि

सम्पूर्ण सप्त धातु Ayurvedic Pathology

रस	212.42	N;95 से 100 e.v.
रक्त	117.80	N;95 से 100 e.v.
मांस	139.80	N;95 से 100 e.v.
मेद	178.91	N;95 से 100 e.v.
अस्थि	131.87	N;95 से 100 e.v.
मज्जा	107.19	N;95 से 100 e.v.
शुक्र	140.52	N;95 से 100 e.v.

वात दोष से प्रभावित सप्त धातु		Normal Estimated Value
रस	49.75	N;95 से 100 e.v.
रक्त	95.78	N;95 से 100 e.v.
मांस	77.40	N;95 से 100 e.v.
मेद	57.00	N;95 से 100 e.v.
अस्थि	82.62	N;95 से 100 e.v.
मज्जा	78.55	N;95 से 100 e.v.
शुक्र	62.24	N;95 से 100 e.v.

पित्त दोष से प्रभावित सप्त धातु		Normal Estimated Value
रस	51.32	N;95 से 100 e.v.
रक्त	106.49	N;95 से 100 e.v.
मांस	88.71	N;95 से 100 e.v.
मेद	86.67	N;95 से 100 e.v.
अस्थि	105.11	N;95 से 100 e.v.
मज्जा	100.25	N;95 से 100 e.v.
शुक्र	90.94	N;95 से 100 e.v.

कफ दोष से प्रभावित सप्त धातु		Normal Estimated Value
रस	172.88	N;95 से 100 e.v.
रक्त	99.91	N;95 से 100 e.v.
मांस	129.51	N;95 से 100 e.v.
मेद	161.26	N;95 से 100 e.v.
अस्थि	120.13	N;95 से 100 e.v.
मज्जा	127.54	N;95 से 100 e.v.
शुक्र	153.24	N;95 से 100 e.v.

1-Bb

Hanu Raikwar, 05 Yrs., Male FUP2ND 2-Jun-17

97 5397

67/70, Bhoosatoli Road, Bartan Bazar, Kanpur-1

ETG

आयुर्वेद का एक और महत्वपूर्ण सिध्धान्त है जिसे सप्त धातु कहते है / इसे आयुर्वेद की पैथोलाजी भी कहा जा सकता है / माना जाता है कि पैथोलाजी की शुरुआत और इस विकृति विग्यान का चिन्तन और मनन आयुर्वेद मे ही सबसे पहले हुआ है / ऊपर की रिपोर्ट मे यह स्थापित होता है कि शरीर मे रस और रक्त और मान्स और मेद और अस्थि और मज्जा और शुक्र की किस तरह की स्तिथि है और इनका सबका शरीर मे उपस्तिथि का स्तर क्या है ? इसके अलावा इस रिपोर्ट मे यह पता चलता है कि यह सभी सप्त धातुयें त्रिदोषो से कितना प्रभावित है /

Kanak Polytherapy Clinic And Research Center

आयुर्वेद श्रोतो कार्य विकृति ; आयुर्वेद श्रोतो - दृष्टि

AYURVEDIC CHANNEL ANOMALIES ; AYURVEDIC CHANNEL PATHOPHYSIOLOGY DATA

Ras Channel Anomalies रस श्रोतो दृष्टि ; Ras Channel Pathophysiology / Pathology	232.63 Normal : 76 - 90 e.v.
Rakta Channel Anomalies ; रक्त श्रोतो दृष्टि ; Rakta Channel Pathophysiology / Pathology	116.95 Normal : 76 - 90 e.v.
Mans Channel Anomalies ; मान्स श्रोतो दृष्टि Mans Channel Pathophysiology / Pathology	141.86 Normal : 76 - 90 e.v.
Med Channel Anomalies ; मेद श्रोतो दृष्टि Med Channel Pathophysiology / Pathology	176.01 Normal : 76 - 90 e.v.
Asthi Channel Anomalies ; अस्थि श्रोतो दृष्टि Asthi Channel Pathophysiology / Pathology	128.50 Normal : 76 - 90 e.v.
Majjaa Channel Anomalies ; मज्जा श्रोतो दृष्टि Majja Channel Pathophysiology / Pathology	104.97 Normal : 76 - 90 e.v.
Shukra Channel Anomalies ; शुक्र श्रोतो दृष्टि Shukra Channel Pathophysiology / Pathology	137.58 Normal : 76 - 90 e.v.
Pran-vah Channel Anomalies ; प्राण वह श्रोत दृष्टि Pran-vah Channel Pathophysiology / pathology	88.61 Normal : 76 - 90 e.v.
Udak-vah Channel Anomalies ; उदक वह श्रोत दृष्टि Pran-vah Channel Pathophysiology / pathology	93.10 Normal : 76 - 90 e.v.
Anna-vah Channel Anomalies ; अन्न वह श्रोत दृष्टि Pran-vah Channel Pathophysiology / pathology	97.09 Normal : 76 - 90 e.v.
Mutra-vah Channel Anomalies ; मूत्र वह श्रोत दृष्टि Pran-vah Channel Pathophysiology / pathology	81.52 Normal : 76 - 90 e.v.
Purish-vah Channel Anomalies ;पुरीश वह श्रोत दृष्टि Purish-vah Channel Pathophysiology / pathology	102.56 Normal : 76 - 90 e.v.
Swed-vah Channel Anomalies ; स्वेद वह श्रोत दृष्टि Swed-vah Channel Pathophysiology / pathology	115.65 Normal : 76 - 90 e.v.

4917
88 **Hanu Raikwar, 05 Yrs., Male FUP2ND** **2-Jun-17** 1-k

67/70, Bhoosatoli Road, Bartan Bazar, Kanpur-1

महर्षि चरक ने "चरक सम्हिता" मे श्रोतो दृष्टि की बात कही है / ऊपर दी गयी रिपोर्ट मे इन श्रोतों के स्तर की उपस्तिथि के बारे मे जानकारी प्राप्त कर सकते है /

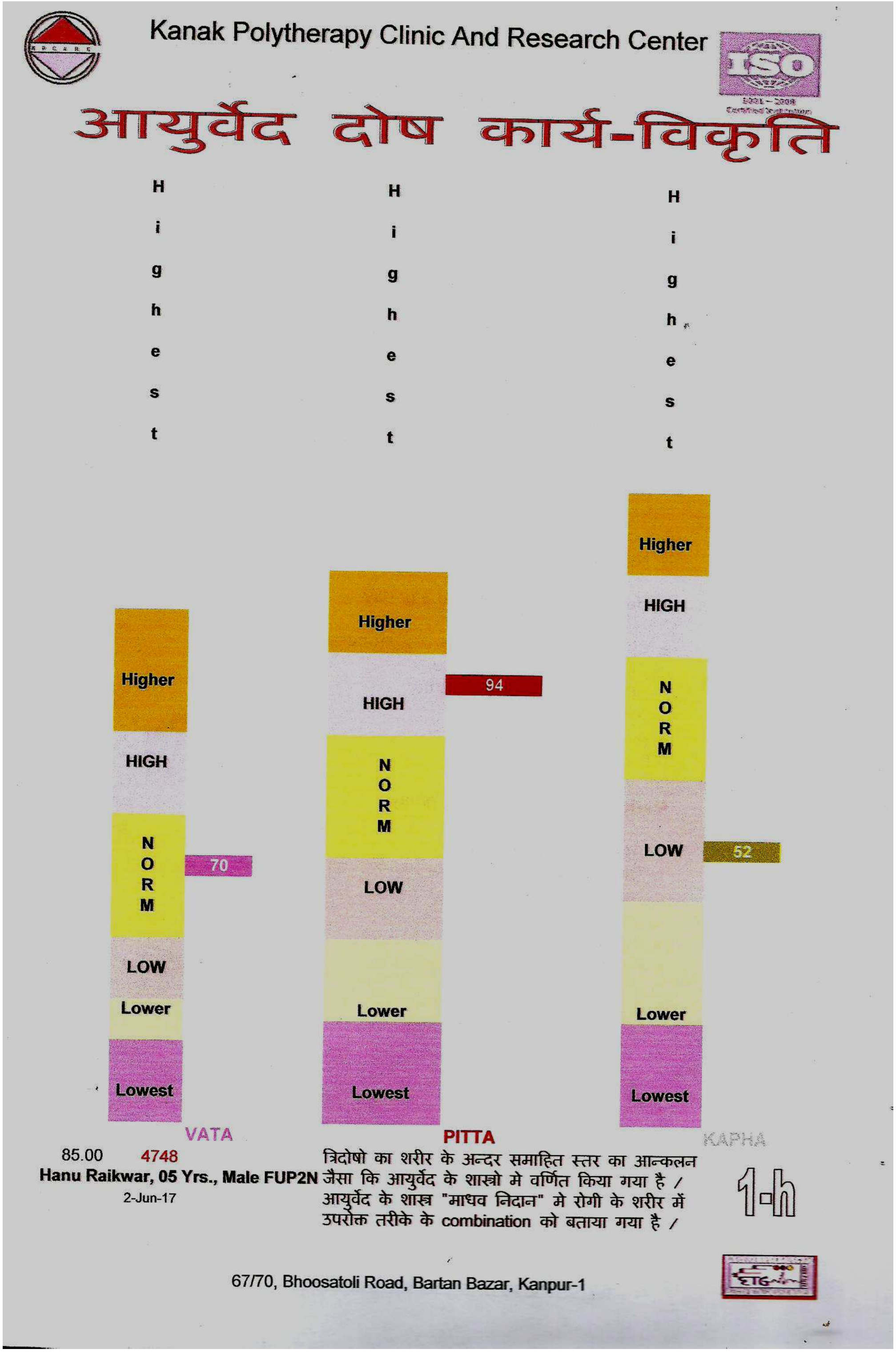

प्रस्तुत रिपोर्ट मे टावर को दर्शाया गया है / इसमे दोषो का आन्कलन सुगमता से हो जाता है / चिकित्सक के मष्तिष्क मे एक तर्ह का कान्सेप्ट बन्ता है कि रोगी के शरीर मे दोषो की क्या स्तिथि है ?

पुस्तक मे दी गयी विस्तृत जानकारी से आयुर्वेद के चिकित्सक और आयुर्वेद के प्रेमियों को आयुर्वेद की निदान ग्यान की आधुनिक हाई तकनीक "ईलेक्ट्रो त्रिदोषो ग्राफ ; ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन " के बारे मे विस्तार से विवरण मिल गया होगा /

इस तकनीक मे निरन्तर सुधार हो रहे है और इसे विकसित करने के प्रयास किये जा रहे है / इस तकनीक के द्वारा आयुर्वेद के उन तमाम गूढः रहस्यों के बारे मे पता लगाने की कोशिश की जा रही है जिनको आधुनिक चिकित्सा विग्यान अवैग्यानिक बता रहा है /

पिछ्ले तीन दशक से इस तकनीक पर कानपुर, उत्तर प्रदेश राज्य, भारत मे स्तिथि रिसर्च केन्द्र मे इसके विकास का काम हो रहा है / यहां बताना उचित होगा कि इस टेक्नोलाजी का परीक्षण भारत सरकार द्वारा किया जा चुका है /

DR. D.B. BAJPAI
INVENTER

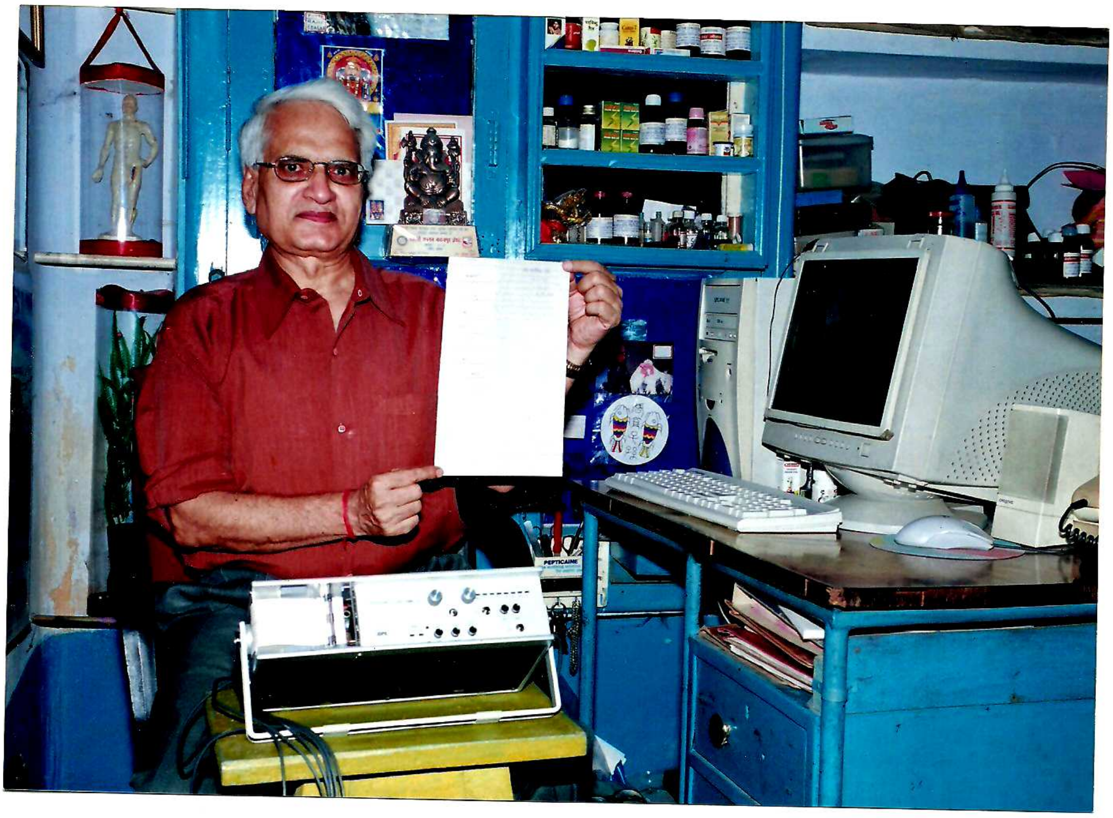

ELECTRO-TRIDOSHA-GRAM
E.T.G.
technology

Dr. Desh Bandhu Bajpai
Born 20 November

- **Ayurvedacharya**
- **Bachelor of Medicine and Surgery**
- **D.P.H. [Germany]**
- **Ex. Lecturer ; J.L.N.H. Medical College and allied Hospital, Kanpur, UP, India**

Appendix;

आर०टी०आई० सूचना के अधिकार कानून 2005 के अन्तर्गत

आर०टी०आई०यानी सरकारी विभागों से सूचना प्राप्त के अधिकार 2005 कानून के तहत देश अथवा विदेश का कोई भी भारतीय मूल का नागरिक आयुर्वेद की आधुनिक तकनीक "ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन / इलेक्ट्रो त्रिदोष ग्राफ / ग्राम" के बारे मे भारत सरकार के निम्न 4 चार विभागों से तकनीक के परीक्षण,तकनीक का चिकित्सा कार्य में उपयोग,रोग निदान की विधि,तकनीक की मान्यता आदि सभी सवालों का उत्तर प्राप्त कर सकते है और सभी शन्काओं का निराकरण कर सकते हैं

भारत सरकार का कार्यालय सन्खया-एक; सेक्रेटरी, आयुष विभाग, स्वास्थय एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय,भारत सरकार, रेड क्रास रोड, नई दिल्ली

1

No.T.12016/14/04-DCC/AYUSH
Government of India
Ministry of Health and Family Welfare
(Department of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha & Homoeopathy) (AYUSH)

IRCS Annexe Building, New Delhi
Dated the 6th December 2004

To,
Dr. Deshbandhu Bajpai,
67/70, Bhusatoli Road,
Kanpur
U.P. – 208 001.

SUBJECT:- Tehnique to Measure the status of Tridosha using ECG Mahine titled "Electro Tridosh Graph/Gram" on 23.12.2004 at 3 P.M. at Committee Room, IRCS Building, New Delhi.

भारत सरकार का कार्यालय सन्ख्या-दो ; केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिध्ध अनुसन्धान परिषद, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, जनकपुरी,नई दिल्ली

2

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद्
(आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार)
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन
नं. ६१-६५, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, सम्मुख 'डी' ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN AYURVEDA AND SIDDHA
(Deptt. of AYUSH, Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India)
Jawahar Lal Nehru Bhartiya Chikitsa Evam Homoeopathy Anusandhan Bhawan
No.61-65, Institutional Area, Opp.'D' Block, Janakpuri, New Delhi-110058

Gram : "AYUSH"
Fax : 28520748
EPBX
28525852, 28520501
28522524, 28525831
28525862, 28525883
28525897

F.No. 25-2/2005/CCRAS/Tech

27 JAN 2006

To
Dr.D.B. Bajpai,
Ayurvedcharya,
Kanak Polytherapy Clinical & Research Centre
67/70, Bhusatoli Road (Bertan Bazar)
Kanpur – 208001

Sub:- Electro Tridoshgram/Graph/Techniques/Scientists presentation –reg.

Sir,

भारत सरकार कार्यालय सन्ख्या तीन;केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान सन्स्थान,आयुष विभाग, स्वास्थय एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय,भारत सरकार,रोड न०६६,पन्जाबीबाग,नई दिल्ली

3

Phone : 25229128
Fax : 25225546, 25221059
E-mail : cria_pb@rediffmail.com
cria_pb@yahoo.co.in

केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

(केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार)
मार्ग नं.६६, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-११००२६

CENTRAL RESEARCH INSTITUTE FOR AYURVEDA, NEW DELHI

(Central Council for Research in Ayurveda & Siddha, Ministry of Health & F.W., Govt. of India)
Road No. 66, Punjabi Bagh, New Delhi-110026

No. F.No.10-1/2006-CRIA/Tech.cell./856 Dated: Dated...09/2/07

To,

Dr.D.B. Bajpai,
Kanak Polytherapy clinic & Research Centre,
Bhusatoli Road, Kanpur – 208 001

भारत सरकार कार्यालय स०-चार ; ने० इ० फाउन्डेसन, विग्यान और तकनीकी मन्त्रालय, भारत सरकार, सेटेलाइट टाउन,प्रेम चन्द नागर रोड, जोधपुर टेकरा, अहमदाबाद,गुजरात

4

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान
National Innovation Foundation

मनीष वैध, राष्ट्रीय संयोजक नवम्बर 2, 2004

सेवा में,

डॉ. देशबन्धु बाजपेयी
67/70, भूसाटोली रोड
कानपुर, उत्तर प्रदेश - 208 001
फोन : 0512 - 2367773

क्र. : NIF/P42UP31A0056

महोदय,

आपके नवाचार "इलेक्ट्रो त्रिदोष ग्राफ/ग्राम" की फाइल प्राप्त हुई । यह आयुर्वेद व आधुनिक विज्ञान के संगम का अनूठा उदाहरण है । आपका शोधकार्य सराहनीय है व हमें विश्वास है कि आपका यह योगदान चिकित्सा क्षेत्र में एक उपयोगी तकनीक साबित होगा ।

Bungalow No. 1, Satellite Complex, Jodhpur Tekra, Premchand Nagar Road, Ahmedabad - 380 015, Gujarat, India
Phone: + 91-79-673 2095/2456, 674 5316, 675 3338/3501, Fax: + 91-79-673 1903
www.nifindia.org, Email: info@nifindia.org

आवश्यक निर्देश;

Right to Information ; सूचना के अधिकार के अन्तर्गत निर्धारित फार्म में E.T.G. ई०टी०जी०आयुर्वेदास्कैन से सम्बन्धित जो भी सूचनायें प्राप्त करना चाहते है उनके लिये ऊपर बताये गये भारत सरकार के विभागों में लिखित आवेदन पत्र के साथ निर्धारित शुल्क जमा करके सूचना प्राप्त करना सबसे बेहतर, भरोसेमन्द और मान्यता प्राप्त तरीका है ।

ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन के बारे में चिकित्सकों और रोगियों के लिये आवश्यक सूचनायें

1- **ETG AyurvedaScan Technology** भारत सरकार से मान्यता प्राप्त तकनीक है / इस तकनीक को **(a) All India Institute of Medical Sciences, New Delhi (b) Lady Harding Medical College & Hospital, New Delhi (c) Ayurved & Tibbia College, New Delhi (d) Central Ayurveda Research Institute, New Delhi** तथा देश और विदेश की उच्चकोटि की चिकित्सा सन्सथाओं **Department of Neurology, St. John Hospital, Ruhar University, BOCHUM, Germany** द्वारा जान्चा, परखा और अध्ययन परीक्षित किया जा चुका है /

2- आयुर्वेद में मानव शरीर की **Electrical Mapping** और **Scanning** करने की वैग्यानिक विधि का विकास अति आधुनिक है / ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन मशीन तथा कम्प्यूटर साफ्ट्वेयर द्वारा प्राप्त आन्कड़ों का सही, सटीक और सूच्छम अध्ययन करके रिपोर्ट स्वरूप मे देने का प्रयास किया गया है /

3- ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन की रिपोर्ट कई भागों में है [अ] रोग निदान, आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्तों का निदान [ब] **Vital Parts Organwise Report** [स] **Systemwise Report** [द] शरीर के **Sectorwise Report** [य] आयुर्वेद के मौलिक सिध्धान्तों का प्रथक प्रथक आन्कलन [र] रिकार्डेड ट्रेसेज आदि के साथ प्रस्तुत किया जाता है /

4 - Some of the complaints / diagnosis / disease conditions, mentioned in this report, may be asymptomatic / in inactive stages / in silent condition / in hidden stages / without any clinical expressions / with no any manifestations, are possible. These conditions are considered due to pathophysiological / pathological weak activation / non activation of the disease phenomenon.

5 - अत्यधिक सावधानी बरतने के बाद भी, ऐसे बहुत से कारण होते हैं, जिनसे गलत इन्टर प्रिटेशन होने की सम्भावनायें बनी रहती हैं / इसलिये सभी आयुर्वेदिक चिकित्सकों को चाहिये कि जब वे रोगी का इलाज या चिकित्सा करें, तब ई०टी०जी० फाइन्डिन्ग्स के साथ साथ क्लीनिकल फाइन्डिन्ग्स को को-रिलेट करके चिकित्सा व्यवस्था करें /

6- The ETG AyurvedaScan Report is based on the terms of established Ayurvedic Fundamentals, Ayurvedic view of Disease Diagnosis, treatment and management of the patient. AYURVEDA prefers holistic comprehensive treatment approach for total CURE and RELIEF.

7- The Data given in this REPORT should not be compared with the findings of the other medical systems.

8- इस रिपोर्ट मे दिये गये डाटा का उपयोग मूल रूप से (प्रथमतः) आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्तों के रोगी के शरीर में उपस्थिथि के आन्कलन के लिये है और इस रिपोर्ट में दिये गये **optional** डाटा (द्वितीयतः) उपयोग रोग-निदान ग्यान के लिये है / हमारे सन्सथान **KERI India** केरी इन्डिया द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सकों के सहायतार्थ पूर्व निर्धारित समय पर ई०टी०जी० आयुर्वेदास्कैन तकनीक से सम्बन्धित **Work Shop** वर्कशाप आयोजित किये जाते है /

9 - **ETG AyurvedaScan** तकनीक से सम्बन्धित किसी भी जानकारी के लिये आप यहां सम्पर्क कर सकते हैं /
सम्पर्क सूत्र - डा० डी०बी० बाजपेयी, **M.D. [Medicine], C.R.C. [Cardio-vascular], Ph.D. [Human Physiology]**, डायरेक्टर एवं चीफ ई०टी०जी० इन्वेस्टीगेटर, सी०सी०आर०ए०एस०, ई०एम०आर० प्रोजेक्ट से व्यक्तिगत अथवा मोबाइल नम्बर **09336238994** अथवा **07376301730** और **e-mail:** drdbbajpai@gmail.com पर सम्पर्क करके सभी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं /

E.T.G. AyurvedaScan
ETG
KERI • INDIA
Electro Tridosha Graph

वेब-साइट ; **http://www.ayurvedaintro.wordpress.com**
E-mail: drdbbajpai@gmail.com

Declaration;

This book is for FREE DISTRIBUTION and can be used by any person.

Although the written material is the Copy-right of the author, therefore any quote or reference , if given any where, must be referenced with due discipline.

Author has complete right to take any legal action against any anomalies coming under law breach.

Dr. D.B.Bajpai
Author

04 June 2017